हमारे संस्कार

लेखिका
स्व० चन्द्रकला भार्गव

प्रकाशक
रवीन्द्र भार्गव
प्रभु निवास, विजयनगर, लखनऊ–२२६००४

प्रथम संस्करण : २०००
सातवीं बार पुनर्मुद्रण : २०१४

मूल्य : २० रुपये

मुद्रक :
हिन्दुस्तानी बुक डिपो
प्रभु निवास, विजयनगर,
गुरुद्वारा रोड, लखनऊ–226004
फोन : 0522-4037600

हमारे संस्कार

संस्कार – संसार के विभिन्न भागों में मानव–समुदायों ने, व्यक्ति के विकास और समाज से उसका सामंजस्य स्थापित करने के लिए, अलग–अलग प्रकार की व्यवस्थाएँ विकसित की हैं। भारतीय मनीषियों तथा विचारकों ने इस प्रयोजन को **'संस्कार'** का नाम दिया है। संस्कार का मोटा (स्थूल) अर्थ है किसी वस्तु को शुद्धया परिमार्जित करना। जैसे भूमि से निकलने वाला हीरा अपने मूल रूप में मिट्टी लगा साधारण काँच का टुकड़ा दिखाई देता है; परन्तु कारीगर उसे तराश कर उसमें अनेक कोने काटकर तेजस्वी चमकदार रूप प्रदान करता है। सोने को भी अपना तेजस्वी स्वरूप प्राप्त करने के लिए अनेक प्रक्रियाओं (परिमार्जन व उपचार) से गुजरना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि बिना परिमार्जन या शोधन की क्रिया के उनका गुण नहीं प्रकट होता है। परिमार्जन की यही क्रिया **'संस्कार'** है।

अतः **संस्कार का व्यापक अर्थ है–** सुधारना, शुद्ध करना, माँजना, चमकाना, उत्तम गुण धारण करना, पाप दूर करना तथा ऐसे कार्य जो जीवन को सुन्दर, कलापूर्ण, शुभ कर्मों में प्रवृत्त बना दें; उन्हें **'संस्कार'** कहते हैं।

मानव–शिशु वंशानुगत और पूर्वजन्म के गुण लेकर जन्म लेता है। उन गुणों को जाग्रत कर उसे अपने विकास और समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए ही हमारे मनीषी ऋषियों ने 'संस्कार' रूप में कुछ क्रियायें (विधान व उपचार) निर्धारित की हैं।

संस्कारों की छाप तन–मन पर पड़ती है। अच्छे संस्कार बुराई से बचा सकते हैं, शुभ कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। कुछ संस्कार जन्म के समय ही प्राणी में रहते हैं, जैसे – भय, क्रोध, प्रेम, इच्छा, दया आदि। और कुछ संस्कार जन्म के बाद मनुष्य के आस–पास के वातावरण तथा रहन–सहन के अनुसार बनते हैं। अतः बच्चा जैसे वातावरण में रहेगा वैसे ही उसके संस्कार बन जायेंगे। संस्कारों से जीवन के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति होती

है। उनसे नये जीवन का प्रारम्भ होता है और मनुष्य नियमों का पालन करने के लिए उद्यत होता है। इस प्रकार संस्कार व्यक्ति पर सामाजिक नियमों का पालन करने का मनोवैज्ञानिक दबाव डालते हैं।

षोड्श संस्कार

प्राणी के अच्छे संस्कार बनें, इसके लिए हमारे पूर्वजों (ऋषि–मुनियों) ने जिन संस्कारों का समावेश किया, उनकी संख्या १६ निर्धारित की गई, जिन्हें **'षोड्श संस्कार'** कहते हैं। ये संस्कार किसी न किसी रूप में भारत के सभी प्रदेशों में प्रचलित हैं। लोकाचार की दृष्टि से उनमें हेर–फेर हो गया है।

१. गर्भाधान	९. कर्णभेद (कर्णभेदन)
२. पुंसवन् (पंचवासा)	१०. विद्यारम्भ
३. सीमन्तोन्नयन (अंगनू)	११. उपनयन (जनेऊ)
४. जातकर्म (बच्चे के जन्म के समय)	१२. विवाह
५. नामकरण	१३. गृहस्थ
६. निष्क्रमण (चन्द्रमा दर्शन)	१४. वानप्रस्थ
७. अन्नप्राशन	१५. सन्यास
८. चूड़ाकर्म (मुण्डन)	१६. अन्त्येष्टि

हमारी भार्गव जाति में भी इन सभी १६ संस्कारों को पहले हम मान्यता देते होंगे, पर अब बहुत से संस्कार लुप्त या कम मनाये जा रहे हैं। अब इनके करने में मंत्र व विधि का विधान भी नहीं रहा। लोकाचार में कुछ संस्कार यह कहकर किये जा रहे हैं कि वे हमारे वंश में होते आये हैं, अतः उन्हें कर रहे हैं। कुछ संस्कार जैसे पंचवासा, अगनूं और बच्चा पैदा होने के बाद – दशूठन (कुआँ पूजन), विद्या आरम्भ, जनेऊ, विवाह और मृत्यु आदि संस्कार हो जाते हैं।

गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक सभी सोलह संस्कारों में 'विवाह संस्कार' सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि तदुपरांत गृहस्थ धर्म ही सोलह संस्कारों को पूर्णता प्रदान करता है। विवाह ही मनुष्य का ऐसा संस्कार है जिसके बाद नवजात शिशु उत्पन्न होता है, बढ़ता है, विद्या प्राप्त करता है और फिर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होता

है। अतः मैंने इस पुस्तक में अपने भार्गव समाज में प्रचलित संस्कारों का यही क्रम रखा है।

मैंने विवाह व मृत्यु संस्कार विस्तार से लिखने का प्रयत्न किया है। परन्तु जितना मुझे मालूम है या मैंने देखा–सुना है उतना ही मैं लिख सकी हूँ।

मैंने यह भी अनुभव किया है कि आजकल की हमारी पढ़ी–लिखी पीढ़ी हर नेग या प्रथा के वैज्ञानिक कारण जानने को अधिक आतुर रहती है और उस प्रथा की पृष्ठभूमि न जानने के कारण उसे मानने में भी आनाकानी व विरोध करती है और अपनी परम्पराओं से विमुख होती जा रही है या उससे अनभिज्ञ है। जिन परिवारों में वृद्ध–बुजुर्गों की छत्रछाया है, वहाँ तो ये वृद्ध अपना मार्गदर्शन देकर इन परम्पराओं को जीवित रखने का प्रयास करते हैं, परन्तु आज की पीढ़ी तो इन सबमें विश्वास करने को ही तैयार नहीं हो रही है। क्योंकि जिस चीज़ के बारे में हमें जानकारी नहीं होती उस काम में हमें रुचि नहीं होती, जरा भी मज़ा नहीं आता। बस, पंडित जी के आदेशानुसार जल छिड़क दिया, फूल डाल दिए, यज्ञ में आहुति डाल दी, हाथ जोड़ लिए और हो गयी पूजा या विवाह। यदि हमें पूरी जानकारी हो कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं, तो हम वही काम पूरे मनोयोग और भावना के साथ सम्पन्न करके, उसका आनंद एवं संतुष्टि अनुभव कर सकते हैं। विवाह में निकासी में तो नाच-गाने आदि पर तो दो-तीन घंटे बरबाद करके लड़की वाले के दरवाजे काफी देर से पहुँचेंगे व सब कार्य में देर कर देंगे; परन्तु विवाह के समय पंडित जी पर जोर डालेंगे कि १ घंटे में ही विवाह कार्यक्रम (फेरे व विवाह, जिसके कारण यह सब आयोजन किया गया है) अधूरा-तिहाई करके सम्पन्न करा दें। यह उचित नहीं है। अतः मैंने इसी वजह से कहीं–कहीं कुछ प्रथाओं के कारणों को फुट-नोट के रूप में भी देने का प्रयत्न किया है। आशा है, मेरा यह प्रयास नई पीढ़ी को संतुष्ट करने में सहायक होगा।

लखनऊ : 1983 *—चन्द्रकला*

प्रस्तावना

इस पुस्तक में वर्णित रीति–रिवाजों को श्रीमती चन्द्रकला जी ने अपने जीवन काल में विभिन्न अवसरों पर लिखा था। परन्तु उनके जीवन काल में यह सामग्री पुस्तक के आकार में प्रकाशित नहीं की जा सकी।

उस सब सामग्री को एकत्रित कर और उसमें यत्र–तत्र संशोधन कर इसे सामयिक रूप दिया है। यह पुस्तक आपके समक्ष है। इसमें यह चेष्टा की गयी है कि उन सभी रीतियों का वर्णन तो कर दिया जाय जो पिछले ४०–५० वर्ष पहले तो अधिकतर मनाई जाती थीं, पर अब वे समयाभाव (जैसे वर पक्ष में सभी कार्य २ या ३ दिन के अन्दर ही करने व बारात का रुकना एक दिन का ही हो जाने) या सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन के कारण नहीं की जाती हैं। अतः उन रीति–रिवाजों को वर्णन तो कर दिया गया है परन्तु वर्तमान परिस्थितियों, समयाभाव व स्थानाभाव के कारण यह रेतियाँ क्रियान्वित नहीं हो पा रही हैं।

यदि पाठक, बहनें या भाई किसी विषय में कुछ त्रुटि अथवा विसंगति पायें तो कृपया सूचित करें, जिससे सुधार में सहायता मिलेगी और यथा संभव उसे ठीक करने का प्रयास किया जायेगा।

— प्रकाशक

१—विवाह संस्कार

विवाह एक सामाजिक व्यवस्था—सृष्टि की निरन्तरता प्रजनन प्रक्रिया द्वारा बनी रहती है। मानव का नर व मादा योनियों में विभाजन इसी प्रयोजन से हुआ है। उच्चतर जीवों में नर–मादा को निकट लाने का कारक प्रबल काम–वासना एवं भोगतृप्ति है। मनुष्य ने अपने सामाजिक विकास के क्रम में इस प्रबल प्रवृत्ति को नियंत्रित करने और उसे उपयोगी बनाते हुए समाज की व्यवस्था में समायोजित करने के लिए ही **'विवाह'** नामक संस्कार निश्चित किया।

विवाह एक अत्यन्त प्राचीन सामाजिक बन्धन है। नारी और पुरुष का परस्पर सहयोग ही विवाह का मुख्य तत्त्व (उद्देश्य) है। यों तो विश्व के विभिन्न समाजों में विवाह की अवधारणा, उसके स्वरूप और प्रयोजन में अन्तर है। मुस्लिम समाज में विवाह एक सामाजिक समझौता है, भले ही उसकी क्रिया में कुछ धार्मिक अंश हो। तीन बार 'तलाक–तलाक–तलाक' कहना ही विवाह के बंधन को तोड़ने के लिये पर्याप्त है। इसीलिए उनके यहाँ विवाह के समय ही 'मेहर' तय हो जाता है। ईसाई धर्म में स्वेच्छाचारी व्यवहार या व्यभिचार के पाप से बचने के लिए विवाह को बेहतर बताया गया है और विवाह चर्च में पादरी द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। इसके विपरीत हिन्दू (वैदिक) विवाह का आधार पवित्र धार्मिक सम्बन्ध है, जो सास्वत है।

हिन्दू विवाह एक पवित्र बंधन—हिन्दू विवाह में वर–वधू के अतिरिक्त एक तीसरा तत्त्व भी उपस्थित है—'देव तत्त्व'। पति–पत्नी परस्पर उत्तरदायी तो हैं ही, साथ ही उन्हें तीसरे तत्त्व पर भी निष्ठा रखनी होती है। इस दैवी या अलौकिक तत्त्व का आह्वान अग्नि के रूप में वैवाहिक मण्डप में किया जाता है। उसके साक्ष्य में पवित्र मंत्रों के उच्चारण के साथ, रिश्ते–नाते वालों की उपस्थिति में, विवाह–सम्बन्धी विभिन्न कार्य विधि–विधानों से सम्पादित किये जाते हैं जिनका प्रतीकात्मक महत्त्व है।

हिन्दू विवाह के प्रमुख तत्त्वों और उसकी अवधारणा का संकेत उसके पर्यायवाची शब्दों से मिलता है। इसके लिए एक शब्द है **पाणिग्रहण,** जिसके मूल में हाथ पकड़ने या सहारा देने का भाव है व अपना बनाना है। विवाह के लिए **परिणय** या **परिणयन** शब्द भी प्रचलित है जिसका अर्थ है अग्नि की प्रदक्षिणा करना (अग्नि को साक्षी मानकर), जो विवाह संस्कार का एक प्रमुख अंग है। **विवाह** शब्द का अर्थ है विशिष्ट ढंग से कन्या को ले जाना अर्थात् अपनी सहगामिनी बनाने के लिए ले जाना। विवाह की अवधारणा को समझने के लिए ये सभी शब्द उपयोगी हैं।

हमारे धर्मशास्त्र में आठ प्रकार के विवाह बताये गये हैं। उसमें माता–पिता द्वारा सहर्ष चयनित वर को आमंत्रित करके कन्या का हाथ सौंपने वाला 'ब्राह्म विवाह' सर्वोत्तम माना गया है। इसी कारण से वैदिक रीति–रिवाज़ के अनुसार आदर्श विवाह में परिजनों की उपस्थित में समस्त कार्य किये जाते हैं और सभी के समक्ष अग्नि को साक्षी मानते हुए सात फेरे लिए जाते हैं।

इस प्रकार शास्त्रों के अनुसार विवाह पद्धति एक परम पवित्र संस्कार का मुख्य अंग है। यह दो आत्माओं का एक पवित्र बन्धन है। विवाह ही स्त्री–पुरुष को गृहस्थाश्रम में प्रवेश दिलाता है। इसके बाद ही मनुष्य इस संसार में नियमबद्ध होकर आचरण करता है। इसके रीति–रिवाज में जाति, कुल–परम्परा व समाज में प्रचलित परिस्थिति के अनुसार समय–समय पर परिवर्तन होते रहे हैं।

मैंने प्रयत्न किया है कि जो पुराने वर्णित रीति व रिवाज जो अब प्रचलित नहीं है उनमें यह लिख दूँ कि अब ये रीतियाँ प्रचलित नहीं हैं या यह कि अब लोग समयाभाव या स्थानाभाव के कारण इन्हें नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त **'भार्गव रीति–संग्रह'** में जो व्यवहार व रीतियाँ दी गयी हैं विवाह में उनका ही पालन करें।

सगाई/अँगूठी भेजना— सम्बन्ध निश्चित हो जाने के बाद कन्या पक्ष की ओर से सगाई की रस्म में चाँदी की १ चौपहल अँगूठी व तिलक के रुपये तथा रोली–अक्षत, फल, मिठाई वर पक्ष के भेजे जाती हैं।

अँगूठी पहनाना—

१. आँगन में एक स्थान को धोकर शुद्ध कर लें, तब वहाँ चौक पूर कर बिना कील वाले दो पट्टे बिछावें* (एक वर के लिए तथा दूसरा विनायक के लिए)।

२. पट्टों पर लाल या गुलाबी किसी भी रंग का ऊनी या रेशमी वस्त्र बिछाकर वर तथा विनायक को उस पर बैठाया जाय।

३. सबकी उपस्थिति में पंडित जी से वर के हाथ से गणेश-पूजन कराकर कन्या पक्ष की ओर से आयी हुई अँगूठी पहनायें।

४. अँगूठी के साथ आये हुए रुपयों से तिलक कर दें।

५. यदि कन्या पक्ष की ओर से अँगूठी लेकर कोई आया हो, तो वह ही अँगूठी पहनाये, अन्यथा अपने यहाँ के किसी बुजुर्ग पुरुष द्वारा ही अँगूठी पहनायी जाय।

६. इसके बाद बहन या बुआ से आरता करवायें।

७. वह वारी फेरी करे तथा वर थाल में बहन के लिए रुपये या भेंट डाले।

८. वर पट्टे पर से उठकर सभी बड़ों के पैर छूकर आशीर्वाद ले।

९. यह रस्म अब प्रायः लग्न के समय ही की जाती है।

लेना-देना— अँगूठी की रस्म के बाद शुभ मुहूर्त में वर पक्ष को, होने वाली वधू के पहनने के लिए एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रूमाल, तथा बोर चोटी या बैना, सुहाग पिटारी (कलावा, तेल, कंघी, मेंहदी, बिन्दी, चूड़ी आदि) व आभूषण भेजने चाहिए। साथ ही चार थैलियों में निम्न सामान भेजा जाता है।

***बिना कील वाले पट्टे क्यों बिछाते हैं ?** शादी आदि के अवसर पर लकड़ी के जो पट्टे बनाये जाते हैं उनमें लोहे की कील नहीं लगती। इसका कारण यह है कि प्रत्येक मनुष्य में एक प्रकार की शक्ति (बिजली) होती है जो मस्तिष्क में केन्द्रित रहती है और वहाँ से नीचे की ओर पूरे शरीर में प्रवाहित होती है। मनुष्य का मस्तिष्क ही इस सम्पूर्ण शक्ति का स्रोत होता है और प्रत्येक अंग का संचालन, नियमन, ऊर्जा-प्रदान वहीं से व्यवस्थित होता है। यह शक्ति विद्युत् (बिजली) की तरह प्रवाह करती है। पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति से मनुष्य के शरीर की इस बिजली को आकर्षित कर उसमें कोई बाधा व हानि न कर सके, अतः नीचे बिना कील वाले पट्टे बिछाते हैं।

१. पहली एक थैली में जो नीचे से लाल रंग की तथा ऊपर से सफेद कपड़े की हो उसमें सवा सेर मेवा, गरी की दो गोले सहित बनायी जाती है।

२. एक सफेद थैली में सवासेर नुकती के लड्डू रखे जाते हैं।

३. एक सफेद कपड़े की थैली मे मिश्री को पीले व गुलाबी रंग के छीटे देकर रखें।

४. एक अन्य सफेद थेली में पाँच प्रकार के जाड़े के लड्डू (पिट्टी, तिल, खोये, बेसन व मेवा के) बनाकर कोथली में रक्खें।

५. प्रत्येक थैली में मेंहदी, डोरा, चूड़ी, पैसे, पीले या लाल कपड़े में पाँच सुपारी और हल्दी से पीले रंगे हुए चावलों के कुछ दाने बाँध कर डालें। इसे **चीर सुपारी** कहते हैं।

६. फल, मिठाई आदि भी ले जायें।

बोर चोटी गूँधना या सगाई पहनाना—

१. वधू के लिए ऊपर लिखा सामान लेकर कन्या पक्ष के यहाँ जाना चाहिए।

२. दोपहर के समय कन्या को सिर सहित स्नान कराके चौकी या पट्टे पर पूरब की ओर मुँह करके बिठावें।

३. कन्या की नन्द या ससुराल से आई कोई भी स्त्री अथवा कन्या की भाभी सिर गूँध कर सब वस्त्र व आभूषण कन्या को पहना दे और गोद में मेंहदी डोरा सहित लाये हुए सामान में से थोड़ा-थोड़ा सामान कन्या की गोद में दे दें।

४. कन्या का मुँह जुठाल कर वारी फेरी करें।

५. उसको माँ या दादी की गोद में बिठावें। इसके बाद कन्या सबको प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करे।

सगाई की विदाई— कन्या पक्ष की ओर से भेंट तथा मिठाई, फल आदि भेजा जाता है।

देव-स्थापना — विवाह का शुभ कार्य आरम्भ करने से पूर्व गणेश जी की मूर्ति द्वारा देव स्थापना की जाती है व सेढ़माता (कुल देवी की स्थापना करनी चाहिए) गणेश जी सब विघ्न बाधाओं को दूर करते हैं। एक दिया जलाकर व चार नुकती के लड्डू रखकर उसका भोग लगा दें। कुल देवी की स्थापना के लिए एक टोकरी में कपड़ा बिछाकर अपनी कुल देवी स्थापित की जाती है। टोकरी में हल्दी, सुपारी, अक्षत व हरीदूब भी रखें। प्रत्येक रस्म को आरम्भ करने से पूर्व घर की स्त्रियाँ (साँस, जेठानी व देवरानी) सभी इनकों छीटें देकर इनकी पूजा करती हैं।

पूजन की थाली— एक थाली में पूजन-सामग्री व गणेश जी की मूर्ति रखें। गणेश जी की मूर्ति उपलब्ध न होने पर सुपारी में कलावा बाँध कर थाली में रखी जाये। नई सीप में रोली, चावल व हल्दी लेकर साथ ही दूब❖, फूल, पान, बताशे, सुपारी, एक दीपक तथा जल का एक पात्र भी उसी थाली में रख लें। यह पूजन की थाली समस्त नेग व शुभ कार्यों के समय पूजन में काम में लाई जाये।

कन्या पक्ष द्वारा लग्न लिखाना—

१. कन्या के विवाह में लग्न ११, ७, ५ या ३ दिन पूर्व सुविधानुसार किसी शुभ दिन में लिखी जाय।
२. आँगन में चौक पूरकर बिना कील लगे दो पट्टे बिछावें और उन पर कन्या तथा विनायक को बैठावें।
३. लग्न के समय कन्या को गोटा लगी गुलाबी साड़ी तथा नई नथ पहनाई जाये।
४. पंडित जी द्वारा कन्या के हाथ से पूजा की थाली में रखें गणेश जी व नवग्रह की पूजा कराई जाय।
५. लग्न पत्रिका के अन्दर दो छोटे पैसे, दो हल्दी की गाँठ, दो सुपारी, इत्र, रोली, चावल के टीके लगाकर पत्रिका बन्द करके उस पर दो

❖**दूब व हल्दी रखने का कारण**—दूब में अशुद्ध पदार्थ को शुद्ध कर देने की शक्ति होती है। साथ ही दूब में बढ़ने व पल्लवित होने की अद्भुत शक्ति है। अतः परिवार की वृद्धि के लिए प्रतीक रूप में इससे पूजन किया जाता है। हल्दी शारीरिक विकारों को दूर करने की शक्ति रखती है; इसका उबटन शरीर को कान्तिमय व स्वस्थ बना देता है।

कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक बना दें।

६. पूजन कराने के बाद लग्न पत्रिका तथा भात पत्रिका स्वयं लिखें या पंडित जी द्वारा लिखावें।
७. लग्न पत्रिका में सर्वप्रथम कन्या पक्ष की ओर के सब पुरुषों के नाम, जिनकी ओर से विवाह का निमंत्रण होता है, लिखते हैं।
८. विवाह की तिथि तथा अन्य रस्मों की तिथि की सूचना भी वर पक्ष को, उनके परिवार के सभी सदस्यों के नाम लिखकर, दी जाती है।
९. लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ भेजी जाती है।
१०. लग्न पत्रिका के साथ ही चार भात पत्रिकाएँ भी लिखी जाती हैं, जिनमें एक भात पत्रिका सर्वप्रथम गणेश जी के नाम लिखी जाती है तथा अन्य तीन पत्रिकाओं में से एक कन्या के नाना-मामा (भातेई) के लिए, दूसरी कन्या की माता के मामा-नाना के लिए (बड़ भातेइयों) तथा तीसरी भात पत्रिका कन्या के पिता के नाना-मामा के लिए लिखी जाती हैं।
११. भात पत्रिका में भी सब घर के पुरूषों के नाम भातेईयों और बड़ भातेईयों के नाम तथा भात की तारीख लिखकर प्रत्येक भात पत्रिका में हरी दूब व पीले अक्षत (चावल), हल्दी की एक गाँठ व एक सुपारी, एक सिक्का रखकर पत्रिका बन्द कर उस पर दो कलावे लपेट दें तथा उस पर रोली से स्वास्तिक 卐 बना दें।
१२. लिखी हुई ये चिट्ठियाँ कन्या की गोद में दे दें।
१३. बहन या बुआ आरता व वारी-फेरी करें।
१४. कन्या व विनायक का मुँह बताशे से मीठा कराकर उनको देवस्थान पर ले जावें।
१५. देवस्थान में जाकर कन्या कुलदेवी आदि का पूजन करे व कन्या की माता कन्या को गोद में बिठाकर आशीर्वाद दे। फिर लग्न पत्रिका वर पक्ष के यहाँ तथा भात की चिट्ठी भातेइयों के यहाँ भेज दें।
१६. गणेश जी के नाम की भात पत्रिका पूजन की थाली में ही रख दें।

वर पक्ष द्वारा लग्न लेना—

१. कन्या पक्ष की ओर से लग्न पत्रिका आती है। आँगन को धोकर साफ करके पूर्व की ओर चौक लगा दें।

२. बिना कील लगे दो पट्टे बिछाकर वर और विनायक को बिठायें। वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रह की पूजा करावें।

३. इसी समय चार भात पत्रिकाएँ लिखी जायँ।

४. एक भात पत्रिका पूजा की थाली के श्री गणेश जी के नाम, एक भात पत्रिका वर के मामा–नाना (भातेई) तथा एक–एक पत्रिका वर की माता के नाना–मामा (बड़-भातेइयों) के लिए तथा एक वर के पिता के नाना–मामा के नाम लिखी जायँ।

५. इनमें अपने घर के सभी पुरुषों के नाम लिखकर बाद में भातेइयों के नाम व भात की तारीख लिखकर उन्हें आमंत्रित करें। इसके बाद कन्या के यहाँ से आयी लग्न पत्रिका को खोलकर, उसे पढ़कर उपस्थित जनों को विवाह की तिथि तथा समय आदि से अवगत करावें। पूजन के बाद वर की बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करे और उन्हें भेंट दी जाय। वर के रूमाल या दुपट्टे में थोड़े बताशे व लग्न पत्रिका दे दें।

६. वर को देवस्थान पर ले जाकर देव दर्शन करायें। फिर वर को माता की गोद में बैठावें।

हल्द हाथ—

१. यह रस्म वर व कन्या दोनों के यहाँ एक ही दिन की जाती है।

२. वर या कन्या, उसको तेल व उबटन लगाकर सिर सहित स्नान करावें। कन्या को गुलाबी साड़ी (गोटे लगी) पहना कर काली चूड़ी व नयी बनी नथ पहनायी जाये। फिर आँगन में चौक पूरकर बिना कील वाले दो पट्टे बिछावें।

३. कन्या/वर, जिसका विवाह हो, उसे और विनायक को पूर्व की ओर मुँह करके बैठावें। गणेश जी व कुल देवी का पूजन करावें। कन्या से डलिया (पिटारी) में रखी कुलदेवी को अर्घ दिलवाया जाता है।

४. कुटुम्ब की सब स्त्रियाँ भी कुलदेवी की पूजा करें। वर या कन्या से कुलदेवी पर बताशा, सुपारी व पैसा चढ़वाया जाये।

५. बहन या बुआ आरता व वारी फेरी करें। आरते में कुछ रुपये दिलवा दें।

६. कन्या/वर को देवता के स्थान पर ले जावें। माँ कन्या को गोद में बैठावे।

७. परिवार की बहुओं की गोद में सुपारी व बताशे दिये जायँ। दो हथलगी (भाभी, चाची या मामी) के हाथ में कलावा बाँध दें।

८. चार हांडियों में डोरा बाँधकर उनके किनारे पीले करें।

९. एक हांडी में मूँग की दाल रक्खें। दूसरी हांडी में उड़द की दाल रक्खें, तीसरी में हल्दी की गाँठें तथा चौथी में कच्चे सूत की कुकड़ी रक्खें। इन हांडियों को देवस्थान में ले जाकर रख दें। मंगलगान हो।

१०. एक सीधा, जिसमें १ किलो मैदा या आटा, ५०० ग्राम घी, २५० ग्राम गुड़ हो व कुछ रुपये कुलदेवी के निमित्त रक्खे जायें। कन्या की माँ सीधे पर छींटे दें।

११. यह सीधा नन्द को दिया जाता है। शाम को गुलगुले-पूरी बनाये जाते हैं।

१२. २२ पूरी तथा २२ गुलगुला अथवा नुकती के लड्डू देवताओं के निमित्त निकाले जाते हैं, जिन्हें ननद या ब्राह्मण-ब्राह्मणी को देते हैं।

१३. इस दिन से प्रतिदिन वर/कन्या व विनायक सर्वप्रथम भोजन करते हैं, फिर अन्य लोग।

१४. इसी दिन से घोड़ी, बन्ने व सेहरा गीत गाये जाते हैं।

पाँवड़े बनाना—लग्न पत्रिका लिखने के पहले या उसके बाद किसी भी दिन अपनी सुविधानुसार 9 (नौ) किलो मैदा के पाँवड़े बनाये जायँ। 9 (नौ) किलो मैदा में लगभग सवा किलो मोयन डालकर २१६ पाँवड़े बनाये जाते हैं। निम्न चार दिन पाँवड़े रक्खे जाते हैं– प्रतिदिन एक डलिया में ५० पाँवड़े, ५ रुपये तथा १ ब्लाउज।

कन्या पक्ष — (१) तेलताई के दिन
(२) रतजगे में
(३) फेरे के समय
(४) विदा के समय

वर पक्ष — (१) तेलताई के दिन
(२) रतजगे में
(३) घुड़चढ़ी पर
(४) बहू के आने पर रतजगे में

५०–५० पाँवड़े चार बार रखे जाने के बाद १६ पाँवड़े बचते हैं जिनमें से ४ पाँवड़े चाक–पूजन के समय थाली में रखे जाते हैं। कोई पाँवड़ा टूट–फूट जाय, इसलिए कुछ अधिक बना लेते हैं। सवासनी इस कार्य को कर दे। **आजकल इससे आधा या और कम पकवान बनवाने व देने की प्रथा भी चल गयी है, इसकी जगह रुपये दे दिये जाते हैं।**

कोठियार— पकवान बनाने वाले दिन के बाद शादी के लिए बनने वाले सामान को रखने के लिए एक स्थान निश्चित करते हैं, जिसे **'कोठियार'** कहते हैं। इस कोठियार में प्रतिदिन घी का दिया जलाया जाय। शादी के लिए बनी या आई मिठाई आदि हर वस्तु कोठियार में रखी जाय। विदा के दिन कोठियार के दरवाजे की चौखट में वर के सवासने द्वारा वन्दनवार बाँधी जाती है। उसी समय वर के सवासने को वन्दनवार की तीयल दे दी जाय।

देव–पूजन तथा रतजगा –

१. तेल ताई की पहली रात को पूर्व दिशा वाली दीवार पर हल्दी व आटे के पिठावे से **'रात'** अलंकृत की जाती है। आजकल रात बनी बनाई (रंगीन) भी मिल जाती है।
२. 'रात' के ऊपर लाल कपड़े में हल्दी की गाँठ, एक सुपारी व पैसे व अक्षत डालकर **'रात'** के बीचों–बीच चिपका दें व उस पर कलावा की जोड़ी भी लगा दें।
३. एक कढ़ाई में सरसों का तेल डाल कर कलावे की बत्ती जलायें।

तेल ताई के दिन रतजगा

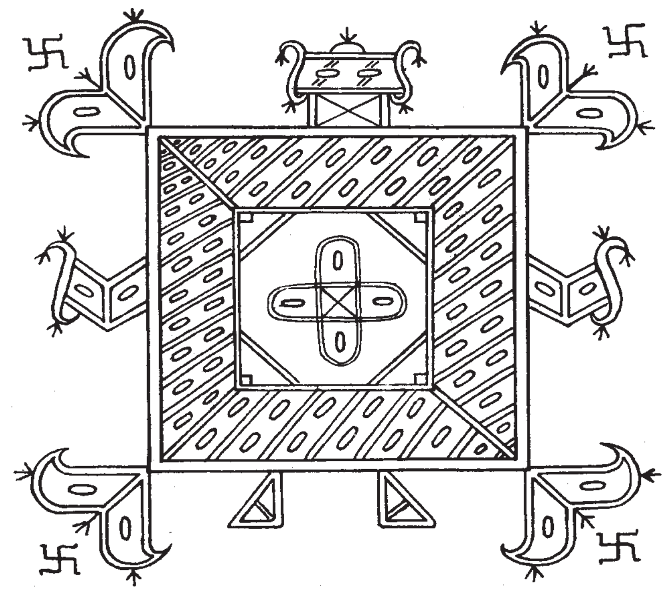

४. वर अथवा कन्या को पट्टे पर बैठा कर देवताओं आदि का पूजन तथा सेढ़माता की पूजा करवाई जाती है।
५. माता तथा कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी पूजा करती हैं। बताशे, सुपारी तथा पैसा चढ़ाया जाता है। फिर बहन या बुआ द्वारा आरता होता है।
६. सेढ़माता के सामने मायदे की तीयल व सवा ग्यारह रुपये और ५० पाँवड़े तथा एक ब्लाउज़ रखा जाता है।
७. हल्द हाथ के दिन की तरह सीधा भी रखा जाता हैं।
८. यह नगद, पाँवड़े आदि सब समान शादी के बाद सवासनी (बहन या बुआ) को दिया जाता है। वर/कन्या देवस्थान में जाकर प्रणाम करते हैं।
९. रात को मंगल गान व **'रतजगा'** किया जाता है। सब महिलाएँ सगुन की मेंहदी लगाती हैं। सवेरे स्नान करके वर अथवा कन्या की मां **'बूढ़ा बाबा'** की पूजा करती हैं।

तेल–ताई* —

१. वर/कन्या को मय विनायक के उबटन लगाकर नहलाते हैं।

२. फिर वर/कन्या को आँगन में चौक पूरकर पट्टा बिछाकर विनायक सहित बिठाया जाय।

३. कुलदेवी की पूजा वर/कन्या तथा उनकी माँ करें।

४. कुटुम्ब की स्त्रियाँ भी कुलदेवी की पूजा करें।

५. एक नई कटोरी में सरसों का तेल और एक अन्य कटोरी में घी व शक्कर रक्खें।

६. दूब के १६–१६ टुकड़ों को एकत्रित करके कलावा के सूत से उन्हें बाँधकर ४ गुच्छी बना लें।

७. लकड़ी के एक कठौता में जौ, सूखा धनियाँ, १४ गुलगुले डालकर रक्खें।

८. दो मूसलों में कलावा बाँधकर रखें।

९. चार जोड़ी कलावे (आजकल कांकन बने बनाये आते हैं), ४ लोहे के छल्ले, ४ लाख के छल्ले, ४ छोटे–छोटे लाल कपड़ों में राई व नमक की डली बाँधकर रक्खें ।

१०. गौर की मूर्ति, जो भार्गवों के हर परिवार में होती है, को स्नान कराके रोली–चावल लगाकर किसी पात्र में रख दें।

११. अब दो सुहागिन स्त्रियाँ (भाभी, चाची आदि हों) हरी दूब की दो लच्छियों को तेल में डुबोकर पहले उनसे गौर माता के नीचे से ऊपर दोनों पैर के पंजों, दोनों घुटनों, दोनों कंधों और माथे पर तेल चढ़ावें।

१२. इसी प्रकार दूब की लच्छियों द्वारा वर/कन्या पर भी तीन बार तेल चढ़ाया जाय।

१३. उन्हें घी–शक्कर खिलाया जाय तथा गीत गाये जायँ।

***तेल चढ़ाने का कारण**—तेल चिकना पदार्थ है इससे शरीर में कोमलता आती है। उबटन व तेल से त्वचा का मैल साफ हो जाता है। शरीर कान्तिमय हो जाता है। दूब के स्पर्श से भी शीतलता आती है। आँखों की ज्योति बढ़ती है और शरीर में स्फूर्ति आती है। हल्दी शरीर के विकार को दूर करती है। कलावा मंगल सूत्र है। अक्षत शुभ हैं।

कांकण बाँधना—तेल चढ़ चुकने के बाद कलावा में लोहे का एक छल्ला, एक लाख का छल्ला, एक पोटली राई–नमक की बाँधकर, इस प्रकार के चार कांकण तैयार किये जायँ। (कांकण बने बनाये आते हैं)

दो कांकण गौर के पैर और हाथ में बाँध दिये जायँ। बाकी दो में से एक **वर** के दाहिने हाथ में और एक बायें पैर में, सात मजबूत गांठें, जो एक सूत के बीच से दूसरा सूत निकाल कर लगाई जायँ, द्वारा बाँध दिये जायँ।

इसी प्रकार कांकण **कन्या** के बायें हाथ में तथा दायें पैर में बाँधा जाय। इसे **'कांकण बाँधना'❖** कहते हैं। उसके बाद ४ सुहागी तथा २ बरूठों हलुवा पूरी से जिमाये जाते हैं।

ब्रह्मा पूजा (चाक पूजन)—

१. ब्रह्मा जी ने ही सृष्टि की रचना की है, अतः शुभ कार्य का प्रारम्भ उनकी पूजा से होता है।

२. आजकल चाक व कुम्हार प्रायः नहीं मिलते हैं, अतः ब्रह्मा जी की चाँदी की बनी मूर्ति या चित्र को किसी गोल पटरे या चकले पर सजाकर उसकी पूजा की जाय।

३. वर/कन्या तथा उसकी माता, कुटुम्ब की और स्त्रियों के साथ पूजा करें।

४. पूजा कर चुकने पर जेघड़ (मिट्टी के पाँच बर्तन हाड़ीनुमा होते हैं) रखकर चारों ओर पाँच स्वास्तिक बनावें व रोली या हल्दी से पूजन करें। मिट्टी का एक घड़ा ननद को, एक घड़ा बड़ी–बूढ़ी मान्य स्त्री को तथा सभी उपस्थित स्त्रियों को एक–एक हांडी दें।

५. आँगन में मंडप के स्थान पर उपरोक्त जेघड़ (करवे वाली छोटी हाँडी या पीतल की छोटी हाँडी) रखवा कर पानी भरवा दें।

६. यह पूजा प्रायः घर के बाहर की जाती है।

❖कांकण में गाँठ क्यों लगाते हैं—कांकण में सात गाँठें लगाकर वर/कन्या को सावधान किया जाता है कि तुम अपने शरीर की सातों धातुओं को बलपूर्वक अपने वश में करो। सातों धातुएँ ही तुम्हें बल देने वाली हैं। इससे संयमपूर्वक रहने का आदेश मिलता है। विवाह कार्य समाप्त होने के बाद कन्या के ससुराल जाने पर वर इस कांकण को खोलता है। अब ब्रह्मचर्य की अवधि पूरी हुई समझी जाती है। कांकण रक्षा–सूत्र माना गया है ताकि अनायास की कोई बाधा नव–दम्पति को कष्ट न पहुँचा सके; कोई रोग न होने पाये। विश्वास–पूर्वक इन नियमों का पालन करना चाहिए। (कांकण ही हिन्दी में शुद्ध रूप है न कि कांकन)

७. माता पूजा के बाद घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर साथिया बना कर भीतर आवे।
८. ब्रह्मा-पूजन में मूँग, चावल, मँगोड़ी, पापड़, चार सुहाल, चार लड्डू, तेल, गुड़, कुछ रुपये और १ कपड़ा होना चाहिए।
६. यह सामान पुरोहित या ब्राह्मण को देना चाहिए।
१०. इस दिन देवताओं की वंदना, मंगलगान व भात गाये जाते हैं।

भात—यह रस्म चाक पूजन के बाद होती है। भात में कन्या/वर के मामा-नाना के यहाँ से प्रायः निम्न सामान आता है :—

कन्या का भात— कन्या की माता की चूंदड़ी, एक साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट, रुमाल व आभूषण या उपहार, हरी-लाल चूड़ियाँ, मेंहदी डोरे, कन्या के पिता का जोड़ा, सास की तीयल, ससुर का जोड़ा व तिलक, कन्या के लिए अनवट, बिछिए, कन्यादान के लिये आभूषण या उपहार, कन्या के लिए गुलाबी दुपट्टा जिससे गठजोड़ किया जाता है तथा अन्य रिश्तेदारों के तिलक-उपहार आदि। थाली के लिये रुपये तथा कन्या के भाई बहनों के कपड़े भी हों।

भात का अन्य सामान — दो कलशे, दो लोटे, एक टोकनी व लोटा, पलंग व पलंग का बिछावन, तकिया, चौकी तथा चौकी का बिछावन, परात १ व थाली १, नायन व महरी (नौकरानी) के लिए धोती। **आजकल बरतन व पलंग आदि देना बन्द-सा हो गया है, और इसके स्थान पर रुपये दिये जाने लगे हैं।**

वर का भात — वर के लिए वस्त्र व जूते। वर के पिता का जोड़ा व तिलक, वर की माता के लिए चुंदड़ी व तीयल और आभूषण या उपहार। वर के लिए गोटा लगा हुआ गुलाबी दुपट्टा तथा सास-ससुर का जोड़ा व तीयल, विनायक के कपड़े। बहू की मुँह दिखाई के लिए आभूषण और वर के भाई-बहनों के वस्त्र। अगर सामर्थ्य हो तो दौरानी, जिठानी व नन्द की साड़ी व सभी सम्बन्धियों के तिलक देने की भी प्रथा है।

भात पहरना—

१. वर अथवा कन्या की माता के मायके से भाई-भावज भात लेकर आते हैं।

२. भातेई के स्वागत के लिए घर के मुख्य द्वार को सजावें।
३. मुख्य द्वार के बाहर चौक पूरकर दो पट्टे रक्खें जिन पर भाई-भावज खड़े हों तथा भातेइयों के साथ आये हुए सभी सज्जन उनके पीछे खड़े हों।
४. द्वार के भीतर की ओर भी चौक पूरकर दो पट्टे बिछाकर वर/कन्या के माता-पिता खड़े हों। उनके पीछे अन्य कुटुम्बी स्त्री-पुरुष खड़े हों।
५. बहन अपने भाइयों का फूल-माला आदि पहनाकर स्वागत करे।
६. महिलाएँ मंगल गान करें। बहन आरते की सजाई हुई थाली में दीपक सजाकर आरता करे व भाई के माथे पर तिलक करके रुपये दें और भावजों के बिन्दी लगाकर गोदी में रुपये दें।
७. एक नया कपड़ा, राई-नोन, सात पीली सीकों में आटा चिपका कर भाई-भावज के ऊपर से वार कर भाई के पीछे डाल दे।
८. भाई, बहन को चुंदड़ी ओढ़ावे। आरता की थाली में रुपये डाले और बहनोई को तिलक करके जोड़ा दे।
६. बहन के सास-ससुर को तीयल जोड़ा दें व तिलक के रुपये दें तथा समस्त रिश्तेदारों — कन्या के बाबा, चाचा, ताऊ, तथा चाचा-ताऊ के प्रत्येक उपस्थित लड़कों के तिलक करके उन्हें रुपये दे। वर के लिए जो कपड़े, दुपट्टा, जूता आदि लाये गये हों वे उन्हें दे। विनायक के कपड़े भी देने चाहिए। इसके बाद भातेइयों (भात लाने वालों) को आदरपूर्वक घर के अन्दर ले जाकर उन्हें बैठाकर झूठ (एक पात्र में कुछ मीठा या किशमिश व मेवा आदि रखकर) द्वारा उनका मुँह जूठा करा दें।
१०. शरबत आदि ठंडा पिलावें व पगधोई करावें। *जेघड़ में सगुन के रुपये डाल दें।
११. भात की विदा में भाई—भाभी, भतीजों के तिलक के रुपये दिये जाते हैं। भाभी व भतीज बहू के लिए ब्लाउज पीस दिये जायें। एक लोटा, एक कटोरा (इच्छा अनुसार बर्तन), सवागज गुलाबी कपड़ा या रुपया, सवा

***जेघड़** अर्थात पानी से भरे कलश— हमारे हिन्दू जाति में स्वाष्तिक की भाँति ही जल से भरे कलश को शुभ चिह्न माना जाता है।

दो किलो मिठे, नमकीन सकरपारे की कोथली, लड्डू, फल मिठाई आदि दी जाती है।

मंडप-रोपन—कन्या के विवाह में भात पहन चुकने के बाद मंडप-रोपन होता है।

बाली पहनाना—माढ़ा गाड़ने के पश्चात् कन्या के चाचा व ताऊ कन्या को सोने की बाली पहनायें। कन्या के पिता द्वारा उन्हें एक पत्तल (लड्डू-कचौरी की) देकर व तिलक करके इच्छानुसार रुपये दिये जायें।

फोकण्डी—कन्या की माता एक हांडी में ३२ लड्डू तथा मैदा के बने ३२ फल और उसके ऊपर साड़ी या तीयल व कुछ रुपये रखकर अपने परिवार की बड़ी स्त्री को देकर सम्मानित करें और आशीर्वाद प्राप्त करें। यदि बुजुर्ग पुरुष को फोकण्डी देनी है तो पुरुष के कपड़े दिये जायँ।

घुड़चढ़ी के लिए तैयार सामान की सूची —

वर के कपड़े, गुलाबी दुपट्टा, हार फूलों का, फूल, साफा, मौड़ी, सेहरा, कलगी, विनायक के कपड़े, फोकन्डी की हांडी साड़ी रूपये, काजल की डिब्बी, काजल डलाई के नेग हेतु सामग्री, तसले में घोड़ी के लिये भीगी हुई चने की दाल १ किलो, घोड़ी बैन्ड की बुकिंग, सजा हुआ आरता थाल, सात पीली सींके वारने की, एक ब्लाउज वारने का, लाल थैली में बूंदी के लड्डू, गठ जोड़, माता को दूध पिलाई, बहन बुआ मौसी को घोड़ी के आगे की साड़ी।

घुड़चढ़ी—

१. भात लिये जाने के बाद उसी दिन शाम को सुविधानुसार वर को स्नान कराके मामा के घर से आये कपड़े पहनाये जायँ।

२. वर का बहनोई साफा बाँधे, सेहरा बाँधे।

३. विनायक को भी नये कपड़े पहनाये जायँ।

४. वर के साफा पर मौड़ बाँधी जाय, कलँगी लगाई जाय।

५. वर के कंधे पर गुलाबी डुपट्टा रखा जाय।

६. उसे वर के पिता इच्छानुसार उपहारस्वरूप भेंट या रुपये दें।

७. इसके बाद सबसे पहले सवासना तिलक करे।

८. आँगन में चौक पूर कर उस पर पट्टे व कालीन बिछाकर वर व बायीं ओर विनायक को बैठायें।

६. पंडित द्वारा गणेश, नवग्रह तथा गौरी का पूजन करावें।

१०. वर के माथे पर रोली-अक्षत से पहले बहन (सवासनी) तिलक करे।

११. भाभी, मामी, चाची आदि काजल डालती हैं। उन्हें कुछ भेंट दी जाती है।

१२. सब कुटुम्बीजन सम्बन्धी व मित्रगण भी वर के तिलक करें, आशीर्वाद दें।

१३. बहन या बहनोई आरता करें व वारी फेरी करें।

१४. गठजोड़ा घुड़चढ़ी के समय ही दे देते हैं। मलमल की धोती को हल्दी से किनारे रंगकर उसमें एक नारियल, सुपारी, हल्दी की गाँठ तथा पैसे बाँध कर गाँठ लगा देते हैं।

१५. इसके पश्चात् वर पट्टे से उठकर नातेदारों सहित बाहर निकले। वर सजी हुई घोड़ी पर सवार हो।

१६. ४ मिट्टी के अथवा पीतल के बरतनों में चने की दाल, दूध, पानी, हरी दूब रखकर घोड़ी को खिलाया जाय तथा घोड़ी वाले को न्योछावर दी जाय।

१७. वर की माता १ थैली में लड्डू रखकर वर को दे और वर अपनी माता को दूध पिलाई का नेग सम्मानपूर्वक भेंट करे।

१८. अपनी बुआ व बहनों आदि को साड़ी भेंट करे।

१६. पहले देवालय में जाकर वर भगवान के दर्शन करे। एक नारियल तथा द्रव्य भगवान को भेंट करें।

बरी में भेंजने का समान— कन्या के शहर में पहुँचकर निकासी से पहले वर पक्ष द्वारा कन्या के लिए ५ गोद जो गुलाबी कपड़े की बनी हो निम्नानुसार भेजी जाती है :—

एक गोद फेरों की, एक गोद बरी की, एक गोद कांकण की, एक गोद सिर गूंधी की व एक गोद पलंग की। इस प्रकार पाँच गोदें होती हैं, जिसमें एक बड़ी गोद होती है। उसमें एक साबुत गोला व लगभग ५०० ग्राम मेवा रहती है। बाकी चार छोटी गोदों में चीर सुपारी व लगभग २५० ग्राम मेवा होती है तथा प्रत्येक गोद में कुछ रुपये भी डालें।

स्वागत बरात— जब बारात कन्या पक्ष वालों के मुख्य द्वार पर पहुँच जाय, तो कुछ सज्जन बरात के स्वागत के लिए, कन्या के दो छोटे भाइयों या भतीजों को लेकर आगे पहुँचें। वर को माला पहना कर इत्र फूल भेंटकर उसका स्वागत करें। वर दोनों लड़कों के तिलक करके रुपये व एक-एक नारियल भेंट करे। बरातियों का फूल माला आदि से मुख्य द्वार पर ही स्वागत किया जाय।

१. कन्या पक्ष के मुख्य द्वार पर नौशे को चौकी पर खड़ा करके कन्या की माता चाँदी की बनी जाली में से वर का मुँह देखे।
२. राई-नमक ऊपर से उतार कर वर के पीछे डाल दें।
३. एक कपड़ा, ७ पीली सीकें वर के ऊपर से वार कर वर के पीछे डाल दें।
४. वर की आरती करके माथे पर २१ मोती की लड़ी लगाकर रोली से तिलक करे व उसे कुछ रुपये दे।

वर माला—अब वर को किसी ऊँचे सुसज्जित स्थान पर बैठा दिया जाय। सहेलियों के साथ, कन्या सुसज्जित होकर हाथ में वरमाला लेकर आवे। मंगलगान के वातावरण में और वर के खड़े हो जाने पर कन्या जयमाला डाले। वर भी कन्या को जयमाला पहनावे। इसे **'जयमाल डालना'** कहते हैं। कन्या वर की तीन परिक्रमा करे। सभी उपस्थित जन, वर व कन्या पर पुष्पों की वर्षा करें।

गौरवा सम्प्रदान—

१. वर को एक चौकी पर, जिस पर लाल रंग की बिछावन हो (गोटा लगा हुआ), बैठा कर चौकी के दोनों ओर दो कलश रक्खे जायँ।
२. कलश पर लोटा व नारियल रक्खा हो।

३. पंडित जी द्वारा वर के हाथ से गणेश जी तथा नवग्रहों की पूजा कराई जाय।
४. इसके बाद कन्या का पिता वर के पेची बाँधे और तिलक कर रुपया दे।
५. वर को पहनने के कपड़े व एक स्वर्ण की अँगूठी आदि भेंटस्वरूप दिये जायँ। वर का सवासना आरता करे। इस रस्म को **'सम्प्रदान'** कहते हैं।

विवाह—कन्या बहन-बुआ के घर की आई चूंदरी पहने। मामा उसको सिल पर खड़ा करके अनवट बिछिये पहनावे। जो आभूषण कन्या को देने हों वे उसे पहना दिये जायँ। यह आवश्यक है कि फेरों के समय कन्या के शरीर पर सुन्दर वस्त्र व आभूषण हों; परन्तु वर पक्ष की ओर का कोई वस्त्र या आभूषण न हो। वर या कन्या को नीले या काले रंग के कपड़े नहीं पहनना चाहिए।

वर को कुर्ता, धोती, टोपी या साफा और गले में गुलाबी दुपट्टा पहनाया जाय। एक कटोरी में केसरयुक्त चन्दन से लेप कर एक जोड़ा जनेऊ पहनाया जाय जो वर पक्ष का ही हो। मुहूर्त का ध्यान रखना आवश्यक है। योग्य पंडित द्वारा विवाह कार्यक्रम स्वस्तिवाचन करते हुए किया जाय। ठीक समय पर फेरे होने चाहिए। कन्या को बुलाकर गऊदान, वस्त्रदान, अन्नदान, छायादान आदि करने के बाद कन्यादान होता है। पहले माता-पिता कन्यादान करते हैं फिर अन्य सम्बन्धी अपने जोड़े के साथ कन्यादान करते हैं। कन्यादान के बाद हवन व फेरे होते हैं। फेरे के समय एक डलिया में ५० पाँवड़े, १ ब्लाउज, ५ रुपये मंडप के पास रखने चाहिए। ये कन्या के ससुराल जाते हैं।

विवाह संस्कार के बाद की रस्में

बरी पहनाना—फेरों के बाद वर-पक्ष के यहाँ से आई बरी की वस्तुएँ कन्या को पहनाई जाती हैं। बरी में एक साड़ी, चुनरी, सुहाग पिटारी, मेंहदी, डोरे, दो जोड़े चूड़े (चूड़ियाँ), चप्पल, मौड़ी, चार गोद छोटी व एक बड़ी गोद दी जायँ, जिनका वर्णन गोद के शीर्षक में कर चुके हैं। साथ में एक सोने की अँगूठी कांगन के लिए तथा वधू के लिए आभूषण आदि भी होने चाहिए।

वर की बहन, बुआ, भतीजियाँ, भांजी आदि, जो बारात में आयी हों, वे ही विवाह–मंडप के नीचे वधू को बिठलाकर बरी पहनावें। वधू का मुँह जुठला दें।

छन्न खेलना (कांकण जुआ)—आँगन में चौक पूरकर पट्टा बिछाकर वर–कन्या को बैठाते हैं। दोनों के कांकण खुलवा दें। एक कूंडे में पानी भरकर हरी दूब व हल्दी डालकर दोनों कांकण कूंडे में डाल देते हैं। कन्या की भाभी, वर की और कन्या की अंगूठी भी उसी कूंडे में डालती हैं तथा वर–कन्या, दोनों, अँगूठी ले लेने की कोशिश करते हैं। ७ बार कांकण खिलाते हैं। जो सबसे आखिरी बार सोने की अँगूठी निकालता है उसी की जीत मानी जाती है। इससे दोनों की बुद्धि की परीक्षा होती है। यदि कन्या जीत जाय, तो वर को अपनी अँगूठी उसे पहना देनी चाहिए। फिर कंकण यथाविधि पुनः बाँध दिया जाता है। **आजकल समयाभाव के कारण यह रस्म नहीं होती है।**

कलेवा—एक थाली में अनेक मिठाइयाँ व पकवान रखकर वर को कुंवर कलेवा के लिए बुलाया जाता है। अपने छोटे भाई–बहनों के साथ आकर वर कलेवा करे। **इसमें १२ वर्ष से बड़े लड़के नहीं आने चाहिए।** थाल में कुछ रुपये नाई या नौकर के लिए डाल दें। कन्या पक्ष के उपस्थित स्त्री–पुरुषों से वर का परिचय कराया जाय। **यह रस्म भी आजकल नहीं हो रही है।**

इसी समय सालियों द्वारा जूते चुराये जाते हैं। उन्हें जूता वापस करने का नेग १ गोला, पान व कुछ रुपये भेंटस्वरूप देकर जूते वापस कर दिये जाते हैं। आजकल कुंवर कलेवा न होने के कारण सालियाँ फेरे के समय ही वर के जूते चुरा लेती हैं और बाद में नेग लेकर वापस कर देती हैं।

न्यातगुरी—बड़हार के पहले न्यातगुरी होती हैं। इसमें वर पक्ष वाले कन्या पक्ष को जनवासे में आमंत्रित करते हैं। गुलाब जल व इत्र की भीनी–भीनी छिड़काव के साथ पान–सुपारी से कन्या पक्ष का स्वागत किया जाता है। वर को चौकी पर बैठाकर पंडित जी गणेश–पूजन करावें। इस अवसर पर वर पक्ष परोपकारी कार्यों के लिये विविध संस्थाओं को श्रद्धानुसार दान देते हैं। दोनों पक्ष के रिश्तेदारों का एक–दूसरे से आपस में परिचय

कराया जाता है। दोनों पक्ष के सम्बन्धियों व जाति के अन्य सज्जनों से परिचय का यह एक अच्छा अवसर है जिसे मेरी समझ से अवश्य किया जाना चाहिए। **आजकल समयाभाव की आड़ लेकर इसे नहीं करते हैं।**

बड़हार—फेरों के बाद अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से बनाया हुआ रात का भोजन वर तथा बरातियों को आदरपूर्वक कराया जाय। इसे **बड़हार** कहते हैं। भोजन के उपरांत सबको तिलक दिये जायँ। पहले प्रत्येक बराती को एक गिलास देने की भी प्रथा थी। अब भी कुछ लोग इसे देते हैं। वर को ५ बरतन, जिसमें उसने भोजन किया है, दिये जायँ। वर के बाबा या किसी बड़े को १ बड़ा लड्डू व सोने की सींक दी जाय।

विदा के समय का सामान—विदा में पाँच प्रकार का पकवान—गुना, आस, फल, पूरी और लड्डू दिये जाते हैं।* गुना, आस, पूरी— ये मीठी और फीकी दोनों तरह की बनती हैं।* आटे के लड्डू व तिल के लड्डू बनते हैं। इन सबका वजन ५ किग्रा हो। एक थैली में सवा किग्रा मीठे व नमकीन सकरपारा, ७ गुझिया रखकर थैली रंगीन लाल या पीले तागे से सी दी जायँ। थैली को एक डलिया में रखकर डलिया पर लाल वा गुलाबी नया कपड़ा ढककर रंगीन तागे से सी दिया जाय। इसे **'बायना संजोना'** कहते हैं। इस डलिया के ऊपर एक थैली, जिसमें (लगभग ५०० ग्राम) सकरपारा भरकर, सी कर रखी जाय। यह **'रास्ते की कोथली'** कहलाती है।

एक अन्य डलिया में १५ पूरी माठ की रखें। इसे **'माठ संजोना'** कहते हैं।

बरतन— टोकनी १, परात २, थाली २, लोटे २, कटोरी ७।

***गुना** का अर्थ है—गुणवान—सोचने समझने की पूर्ण क्षमता रखने वाला। माता–पिता यह पकवान देकर अपनी पुत्री के विषय में दर्शाते हैं कि हमारी पुत्री सब गुणों से युक्ता है और उसमें सोचने समझने की पूर्ण क्षमता है। **आस व पूरी**—कन्या को गुणी तो बनाया ही है साथ में माता ने कन्या को सभी की आशाओं, आकांक्षाओं को पूरी करने की क्षमता भी प्रदान की है। **फल**—कन्या जब गुणी होगी तो सभी की आशाओं को पूरी करने वाली होगी तो उसका फल भी स्वयमेव सुन्दर ही होगा। सभी कुछ सुखमय होगा तो इन लड्डुओं की तरह सदा मधुर होगी। शक्कर पारे अर्थात शक्कर से पगी हुई मिठास से भरपूर–ऐसी हमारी पुत्री है, वह जिस परिवार में जायेगी उसमें अपनी मधुरता से सबको अपना बना लेगी।

सवा किग्रा मूँग, सवा किग्रा चावल दिये जाते हैं। एक पीतल की टोकनी में २५ लड्डू नुकती के, प्रत्येक लड्डू लगभग १०० से १२५ ग्राम का हो, और एक बड़ा लड्डू जो लगभग सवा पाव (लगभग २५० ग्राम) का हो रखा जाता है, जिसके अन्दर १ रु० को रख दें। ये लड्डू आदि सामान समधन के लिए होता है। टोकनी के भीतर सब सामान डाल कर टोकनी के मुँह पर लोटा रखकर पिठावे से बंद कर दें। लोटा में घी भरा जाय। टोकनी को पिठावा से चित्रकारी करके सजाया जाता है।

माठ की १० से १५ पूरी, ५० या १०० पाँवड़े, सकरपारे की दो कोथली सवा-सवा किलो की बनाई जायँ। यह बिदा के समय दी जायँ। लड्डू व कचौरी की पत्तल भी दी जाती है। पत्तलें इच्छानुसार २५ या ५१ हों। हर पत्तल में मिठाई व नमकीन रखा जाता है। प्रायः पत्तल में निम्न वस्तुएँ होती हैं— २ कचौरी, २ खुरमे, २ लड्डू, ४ जलेबी, २ सुहाल तथा मिठाई। **आजकल प्रायः केवल लड्डू व कचौरी ही पत्तल में होती हैं।**

तीयल—कन्या के साथ समधन,* दादस, नानस, बंदरवार, फेरपट्टा, वस्त्रदान तथा पिछोपा इस प्रकार ७ तीयल भेजी जाती हैं। समधन की तीयल के साथ इच्छानुसार रुपये या उपहार दें। नानस, दादस की तीयल के साथ भी भेंट इच्छानुसार दें। तीयल में १ साड़ी, १ ब्लाउज, १ पेटीकोट, १ रूमाल तथा इच्छानुसार रुपये होते हैं।

पुरुषों को जोड़े—समधी, दादसरा, नानसरा, चाचा-ताऊ, सवासना इस प्रकार ५ जोड़े पुरुषों के होते हैं। प्रत्येक के साथ इच्छानुसार तिलक के रुपये दें। जोड़े में पेन्ट, कमीज, रूमाल, तथा मोजे आदि पाँच वस्त्र होते हैं।

बंदनवार बाँधना—वर का बहनोई कन्या पक्ष के कोठियार में बंदनवार बाँधे तथा उसे नेग में बंदरवार वाली एक तीयल दी जाती है।

पलंग—पलंग या पट्टे बिछाकर उस पर वर और कन्या को मौड़ी बाँधकर बिठाया जाय। सब नातेदार तिलक करके परिक्रमा कर भेंट दें। वारी फेरी करें। पहले कन्या पक्ष के सवासने को जोड़ा देकर तिलक करें। इसके बाद वर पक्ष के, यदि वे अपने सम्बन्धियों को जोड़े दिलवाना चाहें, तो

दादासरे, ससुर, चाचा, ताऊ, नानासरे व सवासने का मण्डप के नीचे तिलक करें व जोड़े पहनावें; अन्यथा इस समय तिलक ही दे दें। उनके ऊपर धान या जौ डाले जाते हैं।

पलंग या पट्टे से उठकर वर मंडप के उत्तर की ओर के बंधन को खोल देता है। इसे **'तनी खुलाई'** कहते हैं। इसका नेग वर को दिया जाता है। **यह रस्म भी आजकल नहीं की जा रही है।**

फेरपट्टा—कन्या पक्ष के यहाँ की आखिरी रस्म विदा की होती है। यह रस्म सूर्य की साक्षी में होनी चाहिए। विदा से पहले चौक पूरकर पट्टा बिछाकर वर-कन्या को बैठाते हैं। पंडित गणेश जी व अन्य देवताओं की पूजा करवाये। वधू की सवासनी आरता करे और वर उसको आरते की थाली में रुपये दें। वर तथा कन्या के नीचे बिछाये हुए पट्टों को आपस में बदलवा दें। पट्टों को इस प्रकार बदला जाय कि वे आपस में भिड़ने न पावें। कन्या को एक गुलाबी ओढ़ना उढ़ा दिया जाता है। फेरपट्टे की गोद दी जाती है। फेरपट्टा वाली तीयल वर पक्ष को दी जाती है। आरता किया जाता है। अब कन्या कोठियार की देहली पूजती है। नौकरों, नाइन, महरी आदि को कन्या के हाथ से वस्त्र और रुपये दिलवाये जाते हैं, जो वर पक्ष वाले देते हैं। इस रस्म के बाद वर-वधू विदा कर दिये जाते हैं। वे अब वहाँ ठहर नहीं सकते।

कन्या के नीचे जो पट्टा बिछा था और सीप जिससे पूजा व तिलक आदि किया गया था वे कन्या के साथ जाते हैं। कन्या को सब उपस्थित जन खीसी देते हैं। इसमें रुपये अथवा कुछ उपहार दिया जाता है।

विदाई—कन्या सबों से गले मिलकर बड़ों का आशीर्वाद लेकर पति गृह को जाती है। कन्या पक्ष के यहाँ से कन्या विदा करने के बाद मूँग चावल की खिचड़ी बनती है। कोई अच्छा दिन देखकर मण्डप उतार दिया जाता है तब कथा कहलवा कर ब्राह्मण जिमा दें। देवता भी विदा करते हैं। हलुवा बनाकर कढ़ाई ठंडी करते है। इस प्रकार कन्या के विवाह की रस्म पूर्ण हुई।

बारात वापस आने पर वर पक्ष के यहाँ की रस्में

नववधू का प्रवेश—

१. नववधू जब वर के घर पहुँचती है तो उसके लिए बड़ा समारोह किया जाता है।

२. घर के दरवाजे आदि को सजाया जाय, बाजा–गाजा, सवारी का आयोजन किया जाय।

३. द्वार पर पहुँचते ही नंदरानी स्वागत करके वधू को गाड़ी से उतारती हैं, मांग भरती हैं और बिन्दी लगाती हैं।

४. वधू के गृह प्रवेश करते समय उसके सिर पर जल से भरी झारी रखते हैं जिसमें आम की टहनी पत्ते समेत डाली जाती है।

५. नंद मंगल गान करती हुई बहू का प्रवेश कराती हैं।

६. वर की माता मुख्य द्वार पर चौक पूरकर पट्टे पर वर तथा वधू दोनों को खड़ा करके उनका स्वागत करके आरता करती है।

७. माता वर–वधू को फूल–माला आदि पहरावें, पुत्र के तिलक करें।

८. नेती (छाछ बिलोने वाली रस्सी) से दोनों को नापती है।

९. ये जानने के लिए कि वधू मेरे पुत्र के अनुरूप लम्बी है या नहीं।

१०. आरता करने के बाद दिया जला कर अच्छी तरह बहू का मुँख देखा जाता है।

११. सात तश्तरियों में आटे की कच्ची पूरी रख दी जाती हैं।

१२. यह सूचक है कि इस घर में नेती है, तो दूध, दही, घी से घर सम्पन्न होगा और रोटी है, तो भोजन बनेगा ही।

१३. वधू इन सातों तश्तरियों को इस प्रकार उठावे कि वे आपस में आवाज न करें।

१४. इसके बाद वर–वधू गठजोड़े से घर में प्रवेश करते हैं और सीधे देवस्थान पर जाते हैं।

वार रुकाई—देवस्थान पर जाते समय भाई व भावज का परिचय लेने के लिए बहन द्वार पर खड़ी होती है, वार रुकाई के लिए। भाई स्नेहसहित बहन को सम्मानपूर्वक भेंट (धन) देता है।

देवपूजन—

१. देवस्थान में जाकर वर–वधू देवपूजन करते हैं।

२. कुटुम्ब के सभी जन यथायोग्य एक के पीछे एक होकर बैठते हैं।

३. सबसे आगे वधू बैठती है फिर उसके बाद छोटा देवर बैठता है।

४. इसके बाद लाइन में छोटों से शुरू करते हुए परिवार के अन्य लोग बैठते हैं, सबसे अन्त में बुजुर्ग।

५. एक सूप में मूँग, चावल रखकर वधू को दिये जाते हैं कि वह इनको इस तरह से सूप से पीछे को फटके कि यह अनाज सब जनों के पास तक पहुँच जाय।

६. इसका आशय यह है कि छोटे से बड़े तक सबके भरण–पोषण की व्यवस्था करना वधू का कर्तव्य होगा। इसे **बहू–पसारा** कहते हैं।

७. वधू के आगे जो छोटा देवर बैठा है उसे वधू ५ लड्डू दे।

८. देवर प्रसन्न होकर भाभी से कहे कि "पाँच लड्डू मुझको, लाल बेटा तुझको"।

९. वधू को उठाकर कमरे में ले जावें जहाँ गलीचा बिछाकर उसे बैठावें।

१०. सामने एक चौकी रख १ थाली में से पकवान व गुझिया व सकरपारे ७ सुहागिनों को वधू के हाथ से दिलवायें।

११. उसके बाद वधू का मुँह जुठला कर उससे जूठ में रुपये डलवायें। थाली में बचा हुआ पकवान नाइन को दे दें।

१२. इसके बाद सास वधू का मुँह देखे, मुँह दिखाई दे और वारी फेरी करें।

१३. फिर घर के अन्य कुटुम्बीजन वधू की मुँह दिखाई करके वारी फेरी करें।

कांकण खोलना— वर–वधू नहा लें तब कांकण खोलने का आयोजन किया जाय। भाभी, चाची या मामी कांकण खिलावें। कांकण खेलने के

समय कूंड़े में जल, दूब व हल्दी डाल दें। फिर दोनों के कांकण खुलवा कर कूँड़े में ही डाल कर कांकण खिलावें। कूंड़े में एक चाँदी व एक सोने की अँगूठी डालकर कांकण खिलाते हैं। ५ या ७ बार कांकण खिलाया जाता है। आखरी बार में जिसकी मुट्ठी में सोने की अँगूठी आ जाती है उसकी ही जीत मानी जाती है। अब वधू की बन्द मुट्ठी को वर द्वारा खुलवायें। इसके बाद वर वह सोने की अँगूठी वधू को पहनावे। नन्द आरता करे व उसे आरते में भेंट दी जाय। दोनों को उठाकर देवस्थान पर ले जायें। ले जाते समय बहन वार रुकाई करें। देवता पर छींटे दिलवा दें। वधू को नया जोड़ा पहनवाया जाय। उसी दिन एक नई नथ बनवाकर वधू को पहनाई जाय।

इसके पश्चात् भोजन आदि होता है। सर्वप्रथम चार सुहागिन व दो बरुट खिलाये जाते हैं। बहू से भोजन परोसवाना चाहिए। रात को रतजगा किया जाता है। गाना–बजाना व नाच आदि होता है। वधू से भी गाना व नाच कराया जाता है। इस प्रकार उसकी भी परीक्षा हो जाती है। देव–स्थान में १ किग्रा मैदा या आटा, ५०० ग्राम घी, ५०० ग्राम गुड़, १ तीयल, सवा ग्यारह रुपये चढ़ाये जाते हैं। ५० पाँवड़े, १ ब्लाउज, तथा १ रुपया एक डलिया में रक्खे जाते हैं। दीवार को धोकर या लीपकर गेरू से पोतते हैं फिर हल्दी में मैदा मिलाकर उससे **'रात'** रखी जाती है, जैसी पृष्ठ ३२ पर दी है। 'रात' रखी जाने के बाद पूजा की जाती है। पूजा के बाद बहू लड्डू, छुहारे देकर सबके पैर छूती है।

वधू परिचय—दूसरे दिन या उसी दिन शाम को, जैसी सुविधा हो, वर पक्ष अपने यहाँ परिवारजन, सम्बंधियों व जान–पहचान वालों को आमंत्रित करके वधू का परिचय कराते हैं तथा वधू को आशीर्वाद आदि दिये जाते हैं। गीत व नृत्य आदि आयोजित किये जाते हैं।

रात को रतजगा किया जाता है। सोहागरात मनाई जाती है और इस रस्म के बाद वर–वधू दम्पति रूप में परिणत हुए माने जाते हैं।

बायना खोलना—बहू के साथ आया हुआ सामान (बायना) खोला जाता है। बायने की डलिया सौभाग्यवती स्त्रियाँ खोलती हैं। उसमें से देवताओं के निमित्त २२ पकवान निकाले जाते हैं, जो नंद को अथवा ब्राह्मणी

बहू के आने पर रतजगा में

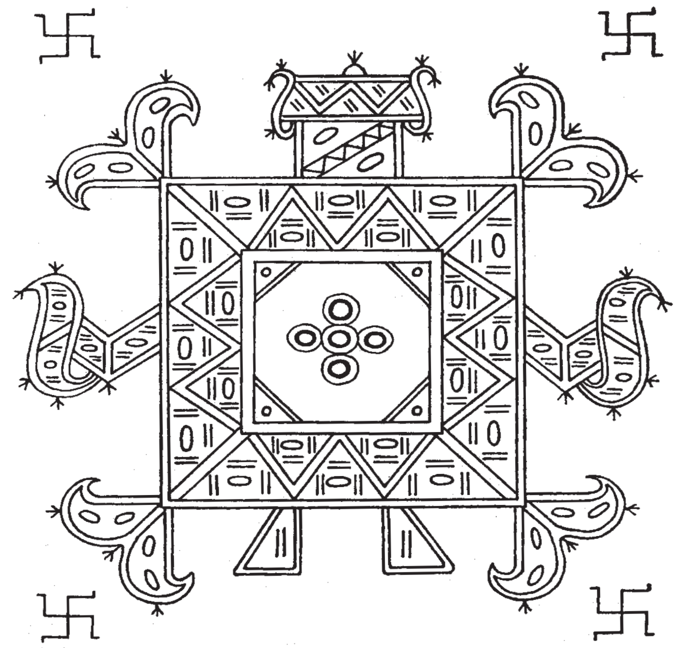

को दिये जाते हैं। टोकनी खोल कर बड़ा लड्डू वधू की सास को दिया जाता है। फिर दो लड्डू के २२ टुकड़े करके, जो देवताओं के निमित्त होते हैं, (अछूते) निकाले जाते हैं। ये भी नंद या ब्राह्मणी को देते हैं। शुभ दिन शोधकर बहू की मायके को वापसी होती है। सवा सेर सकरपारा एक कोथली में रखकर बहू के साथ दिये जाते हैं। समधन की तीयल व एक अन्य साड़ी और दें।

गौना—मायके से दूसरी बार ससुराल आने को **गौना** कहते हैं। इसमें लड़की के पहनने के कपड़े, ओढ़ने–बिछाने के कपड़े, दो जोड़ी बिछिया, अँगूठी, कान का आभूषण दिया जाता है। ५ सेर (मैदा के बने पकवान) बायने होते हैं। लड़की के ससुराल वाले सब कुटुम्बियों का तिलक दिया जाता है। **आजकल गौने की यह रस्म विवाह के समय ही कर दी जाती है।**

२—पुंसवन (पचवांसा)

बहू के गर्भधारण का निश्चय हो जाने पर यह संस्कार किया जाता है। गर्भ निर्धारित होने के पाँचवें माह (पाँच माह समाप्त होने से पूर्व)* इसे करना चाहिए। किसी कारणवश यदि पाँचवें माह तक न कर सके तो सातवें माह में कर लेना चाहिए। गर्भधारण के शुभ संदेश को गर्भवती के मायके तथा नंद के घर भेजना चाहिए। ननद व मायके दोनों के यहाँ से दो थैलियों में लड्डू-मेवा व अन्य सामान रखकर आता है।

मेवाशीरनी—एक सफेद कपड़े की थैली में सवा सेर नुकती के लड्डू, ५ कलावा, मेंहदी, बिन्दी, चूड़ी के पैसे और चीर सुपारी (एक गुलाबी कपड़े में ५ सुपारी तथा हल्दी से पीले करके चावल के दाने को 'चीर सुपारी' कहते हैं) रखे जाते हैं। थैली का ऊपरी भाग पीला करके रंगीन तागे से सी दिया जाता है। इसे '**मेवाशीरनी संजोना**' कहते हैं।

दूसरी थैली, जिसका ऊपरी हिस्सा सफेद हो तथा नीचे का हिस्सा लाल कर दिया गया हो, में लगभग ५०० ग्राम मेवा (पाँच प्रकार की), २ गोले, मेंहदी, डोरा, बिन्दी, चूड़ी के पैसे, एक लाल कपड़े में ५ सुपारी तथा पीले रँगे चावल बाँधकर, थैली में रखकर थैली को रंगीन तागे से सी दिया जाता है।

ये दोनों थैलियाँ पचवांसा के दिन से एक दिन पूर्व आ जानी चाहिए। मेवाशीरनी खोलने का कार्य मावस के बाद आने वाली दोयज को करना चाहिए। इस दिन मायके से आई हुई थैलियों में से थोड़ा देवताओं के निमित्त अछूता निकालकर लड्डू व मेवा बहू की गोद में दे दिये जायँ। इसी प्रकार नन्द के घर वाली थैलियों में से मेवा व लड्डू निकाल कर बहू की गोद में दिये जायँ; इसमें से अछूता नहीं निकालते।

दूसरे दिन बहू को सिर सहित स्नान कराके, नया रंगीन कपड़ा पहराएँ

*पाँचवें मास से भ्रूण का मस्तिष्क व शरीर के अन्य अंग बनने शुरू हो जाते हैं, अतः इस रीति से घर वाले तथा गर्भवती को यह चेतावनी दी जाती है कि अब वे सावधानी बरतें व मन व कर्म से अच्छे विचार ही लावें जिससे होने वाले शिशु के ऊपर उनका अच्छा असर पड़े व वह स्वस्थ व सुदृढ़ हो सके।

उसके हाथ में मेंहदी लगाई जाय। पट्टे पर पूरब की ओर मुँह करके बहू को खड़ा करें। बहू की गोद में भीगे हुए चनों को, किसी सौभाग्यवती स्त्री से जिसकी सब संतान चिरंजीव व स्वस्थ हों, आँदला भरकर डलवाये जायँ। कहीं-कहीं ताजे फल भी साथ में दिये जाते हैं। इस रस्म को **'अछूती छोल डालना'** कहते हैं। अछूती छोल के चने बहू को खाना चाहिए। इसके बाद आने वाले बुधवार या शनिवार को घटपूजन होता है।

घटपूजन के दिन देवस्थान में पूर्व या पश्चिम की ओर चौक पूरकर पट्टा बिछाकर बहू को बिठाया जाय। देवी की स्थापना करके कड़ुए तेल का दीपक जला दिया जाय। देवी जी पर तेल व गुड़ एक दियाली या कटोरी में रखकर चढ़ाया जाय।

नीचे लिखा सामान घर की बड़ी-बूढ़ी या ब्राह्मणी तैयार करें :—

चार-चार पूरी	८ जगह
बेसन की पकौड़ी	१६
गुलगुला	१६
बैंगन की फाँक	८
हलुआ	थोड़ा-सा

उपर्युक्त सब सामान बनाया जाता है। बनाये गये सामान के आठ भाग करते हैं। बाँस की बनी एक डलिया में ऊपर लिखे सामान में से सात जगह (४ पूरी, २ पकौड़ी, २ गुलगुला, १ फाँक बैंगन और थोड़ा-सा हलुआ) रख देते हैं।

आठवीं जगह के सामान को सवा हाथ सफेद कपड़े, जिसके कोने पीले किये गये हों, पर रखकर बाँध दें। एक टोंटीदार लोटे, जिसे झारी कहते हैं, में पानी भरकर उसके ऊपर पोटली में बँधे इस सामान को रख दें। डलियों में लगे सब सामान को सात सुहागिनों को दिया जाता है तथा कपड़े में बँधा सामान नन्द को दे दिया जाता है।

३—सीमन्तोन्नयन (अगनूं) संस्कार

अंगनू वरजना—अगनूं संस्कार का नाम सीमन्तोन्नयन संस्कार भी है।

यह संस्कार जब बहू का गर्भ आठ महीने का हो जाय, तब किया जाता है।* आठवाँ महीना पूरा होने से ८-१० दिन पहले शुभ दिन देखकर बहू को सिर सहित स्नान करावें। बहू को पट्टे पर खड़ा करके उसकी गोद में भीगे चने किसी सौभाग्यवती स्त्री, जिसकी सब संतान चिरंजीव व स्वस्थ हों, के द्वारा **'चीर सुपारी'** सहित डलवायें। इसे **'अगनूं वरजना'** कहते हैं। इस दिन देवताओं की वन्दना के गीत गाये जाते हैं। किसी पंडित से गणेश-पूजन कराकर बहू के मायके इस शुभ रस्म की तिथि-सूचना की चिट्‌ठी भेजी जाती है। इसे भात की चिट्ठी कहते हैं। अंगनू वरजने के आठवें या पंद्रहवें दिन अगनूं पहराई जाती है।

अंगनू पहराना—अगनूं के पहले वाली रात को तारे निकलने के बाद देवपूजा की जाती है। देवस्थान को धोकर, पूर्व या पश्चिम की दीवार के १ हाथ लम्बे व १ हाथ चौड़े स्थान को साफ कर लेते हैं। फिर गेरू से उस स्थान को लीपना चाहिए। सूख जाने पर इस पर मैदा व हल्दी मिले पतले घोल से **'रात'** रखी जाती है। इसे नन्द रखती है। 'रात' रखने के बाद एक कढ़ाई में तेल लेकर दिया जलाया जाता है। एक जोड़ा कलावा, तथा २ इंच लम्बे-चौड़े चौकोर कपड़े में २५ पैसे व सुपारी रखकर **'रात'** पर चिपका देते हैं। पूजन के समय १ कुल्हड़ में मूँग, १ कुल्हड़ में चावल भरकर रखा जाता है। एक तीयल, गुड़, घी व आटा देवताओं के लिए रखा जाता है। कुछ रुपये भी होते हैं जो हर परिवार में अलग-अलग संख्या में रखने की प्रथा है। अंगनू में ४१/२ किलो मैदा के १०० पाँवड़े बनाये जाते हैं। रात की पूजा करते समय ५० पाँवड़े व अंगनू पहनते समय ५० पाँवड़े रखे जाते हैं।

रातभर जागरण (रतजगा) कर मंगल गान होता है। सबेरा होने पर दिन में ४ सुहागिनों और २ बटुकों को भोजन कराया जाता है फिर सब कुटुम्बी भोजन करते हैं।

दोपहर बाद (अपराह्न) में आँगन में चौक लगाकर दो पट्टे बिछाये जाते हैं। गर्भवती स्त्री व पति दोनों को पट्टे पर खड़ा करके मायके से आया

*इस संस्कार करने का मन्तव्य यह है कि अब गर्भस्थ बालक व स्त्री ऐसी अवस्था में आ गये हैं कि उसे कोई भारी वस्तु उठाना-धरना, अधिक शारीरिक परिश्रम वाले कार्य नहीं करना चाहिए। गर्भस्थ शिशु की हिफाजत के लिए सभी सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

हुआ भात पहनाया जाता है। भात में सास-ससुर का जोड़ा व तीयल, दामाद का जोड़ा, बेटी की चूंदड़ी व तीयल, आभूषण तथा सब रिश्तेदारों के तिलक दिये जाते हैं। इसके अलावा साध का एक ब्लाउज़ होता है। एक गोद होती है जिसमे २५० ग्राम मेवा व एक गोल होता है।

बहू का भाई चूंदड़ी उढ़ाता और बहनोई के तिलक करता है। बहन भाई की आरता उतार कर उसके माथे पर तिलक करके उन्हें रुपये देती है और अपनी भावज की गोदी में भी रुपये देती है। भाई आरते की थाली में रुपये डालता है। यह सब कार्य हो चुकने के बाद बहू तथा उसका पति देवस्थान में जाकर देवी को प्रणाम करते हैं। नन्द द्वारा वार रुकाई होती है। बहू सब पूज्य स्त्रियों को पैरों-पड़ाई देती है। इसके बाद मंगलगान होता है। सबको भोजन कराया जाता है।

भावजों को भात की विदा में एक सकरपारे की सवा किलो की कोथली दी जाती है। उनकी वापसी के समय उनके लिए ब्लाउज के कपड़े भी देते हैं। जितने भाई-भतीजे हों उनका तिलक दिया जाता है। जिन रिश्तेदारों ने भात के रुपये भेजे हों, उन सबों के यहाँ रुपये भेजे जाते हैं (तिलक व पकवान के)। नाइन व महरी के लिए एक-एक धोती और अन्य नौकरों के लिए रुपये दिये जाते हैं।

अगनूं के अवसर पर **''साध''** नामक पकवान बनता है। इसमें मैदा के सात प्रकार के पकवान बनाये जाते हैं जिनको घवरी, गोली, चकोली, त्रिकोन, गुझिया, पूरी और चोपड़ा कहते हैं। ये सब पकवान बहुत छोटे-छोटे बनाकर तलकर शक्कर में पागे जाते हैं, जो देखने में बहुत सुन्दर लगते हैं।

साध जिमाना—दूसरे या तीसरे दिन नंद भाई-भावज को अपने घर बुलाकर अनेक प्रकार के, खट्टे-मीठे, तीखे, चरपरे व्यंजन बनाकर उसे खिलाती हैं। खाने के बाद पान-सुपारी से सत्कार करके भाई के रोली से तिलक कर रुपये देती है, तथा भावज को रुपये व एक ब्लाउज पहनाती है। इसे **'साध जिमाना'** कहते हैं। उसी दिन शाम को अपने घर में भी लौटकर 'साध' जिमाई जाती है। इसमें सात प्रकार के जो पकवान बनाये गये थे, वह बहू को सात सुहागिनों के साथ खिलाये जाते हैं। मायके से आया ब्लाउज बहू को दिया जाता है।

४—बालक के जन्म के समय के जातकर्म संस्कार

कन्या उत्पन्न हो या पुत्र उनके जन्म लेते ही उसे शुद्ध करने के लिए शरीर में तेल लगाकर, मलमल के पुराने कपड़े से पोंछकर, गर्म जल से स्नान कराया जाय। शहद तथा गाय के घी को उँगली में लगाकर उसका मुख शुद्ध करें। जो राल मुख में हो उसे साफ कर दें। बच्चे को साफ धुले शुद्ध कपड़े में लपेटकर नरम बिछौने पर लिटा दें। फूल की थाली बजाई जाय। जच्चा की यथोचित सेवा करके लिटा दिया जाय। कन्या होने का शुभ संवाद हाथ में पीले चावल लेकर नाई अथवा नौकर द्वारा सम्बन्धियों के यहाँ भेजना चाहिए। लड़का होने पर हरी दूब लेकर जाना चाहिए। पंडित को बुलाकर शुभ घड़ी, नक्षत्र आदि पूछना चाहिए। बाहर वाले सम्बन्धियों को पत्र द्वारा सूचना भेजनी चाहिए।

पंडित से जच्चा के स्नान का दिन, छठी पूजन व कुआँ पूजन आदि जातकर्म संस्कारों के करने के दिन आदि पूछने चाहिए।

(१) छठी

जच्चा का स्नान तथा छठी-पूजन—जब बच्चा ५, ६ अथवा ७ दिन का हो जाय, तब शुभ दिन (रविवार, मंगलवार या वृहस्पतिवार) देखकर जच्चा और बच्चा को उबटन लगाकर गर्म पानी से स्नान कराया जाय। उनके कपड़े, बिस्तर आदि बदल दिये जाते हैं।

छठी पूजन—शाम को ४ बजे के लगभग सौर घर में पूर्व या पश्चिम की दीवार को धोकर उस पर गोबर से षष्ठी देवी की स्थापना की जाय तथा उसको रोली, हल्दी व आटा से अलंकृत करें। इसे **'बे'** कहते हैं। कुछ जौ या गेहूँ के दाने उस आकृति के समीप डाल दें।

नवजात बच्चे को बुआ के घर से आये नये कपड़े, जो लाल या गुलाबी रंग के हों, पहनाये जायँ। कमर में काले डोरे की बनी करधनी, हाथ में काले डोरे की बनी पोंहची, तथा गले व पैर में भी काले डोरे से बनी डोरी पहनावें। सिर पर टोपी पहनाई जाय। यह सब वस्त्रादि व साबुत गोला बुआ के यहाँ का होता है। इसे **छटूलनी** कहते हैं। सवा गज कपड़े के चारों कोने पीले कर बीच में साथिया बनाकर बच्चे का पोतड़ा तैयार करें।

बच्चे की छठी पर 'बे'

जच्चा को रंगीन साड़ी पहनाकर चौक लगाकर पट्टा पर बैठाया जाय। जच्चा बच्चे को गोद में लेकर षष्ठी देवी **'बे'** की पूजा जल, रोली, हल्दी व अक्षत से करे। एक रुपया भेंट चढ़ावे तथा एक दियाली में दिया जलाया जाय। गुड़ व तेल चढ़ावे। चार रोटी, शक्कर व चावल का भोग लगावे। पैसा पीला करके चढ़ावे। कच्चे आटे की १४ पूरी और ११ रुपये एक कटोरी में रखकर बायना काढ़कर नन्द को दें।

देवी जी से बच्चे की दीर्घायु की वंदना करके पट्टे से उठकर बाहर आकर उनसे सूर्य-पूजा कराई जाय। चौक लगाकर पट्टा बिछाकर वधू बैठे तथा तवा उलटा करके उसके ऊपर चारों कोनों पर हल्दी से साथिया बनावे (ये सूर्यमण्डल का रूप माना गया है) व हल्दी-चावल से पूजा करे। चारों साथिया पर २५ पैसे चढ़ावे। कच्चे आटे से बने ५ फल चढ़ावें। थोड़ा अनाज पट्टा के पास डाले तथा हाथ में जल लेकर तवा के चारों तरफ डाले और खड़े होकर परिक्रमा करे। सूर्य की तरफ मुँह करके अर्घ दे और फिर घर में वापिस चली जाय।

लड़के की छठी पर साथिये (दाईं ओर)

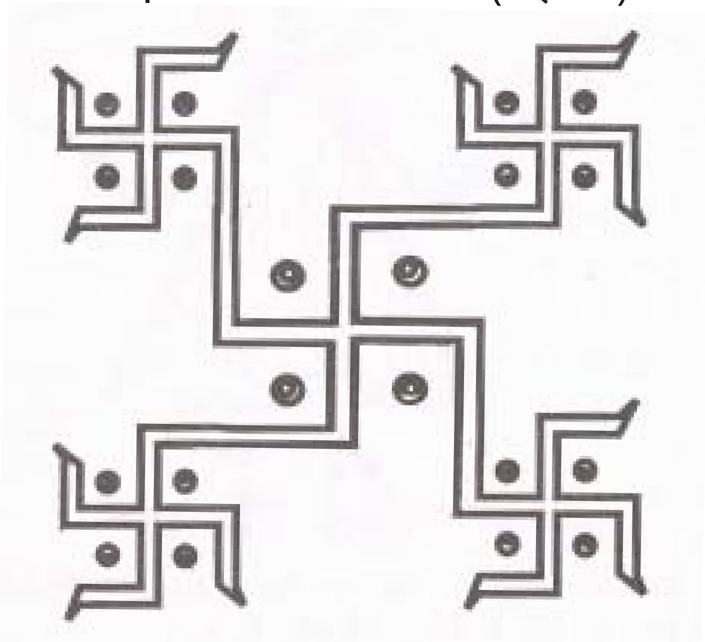

यदि लड़का हुआ है तो सौर घर के दरवाजे के बाहर वाली दोनों दीवारों पर नन्द दाहिनी ओर **'साथिया'** और बाईं ओर **'छावड़ी'** रखती है। ये आकृतियाँ विष्णु व लक्ष्मी के प्रतीक रूप में बनती हैं जिससे हमारे नवजात पुत्र की ये देवता रक्षा करें। सूर्य-पूजा करके लौटते समय जच्चा साथिया पूजती है। साथिया में ५ रुपये और छावड़ी में ताँबे के ५ पैसे चिपकाये जाते हैं। नन्द को सोने की अँगूठी व साड़ी दी जाती है। साथिये के पास मूँग चावल रखा जाता है, यह भी नन्द को दिया जाता है। साथिये रखने से पूर्व नन्द को तिल चावली दी जाती है। जो स्त्रियाँ आयी हों उन्हें तथा बहू के पीहर वालों को भी तिल चावली दी जाती है। छावड़ी की पूजा भी रोली के छींटें व अक्षत से की जाती है।

देवी जी के पास जो दीपक जलाया था उसकी लौ में फूल या चाँदी के कटोरे में काजल बनाकर बुआ बच्चे की आँख में लगावे। कटोरा बुआ को मिलता है। देवी-देवताओं की वन्दना के गीत गाये जाते हैं। सोहर गान

होता है। उपस्थित महिलाओं का जलपान से स्वागत किया जाय।

छठी के दिन दिन में अथवा रात्रि में जब सुविधा हो मंगल-गान किया जाय।

लड़के की छठी पर छाबड़ी (बाईं ओर)

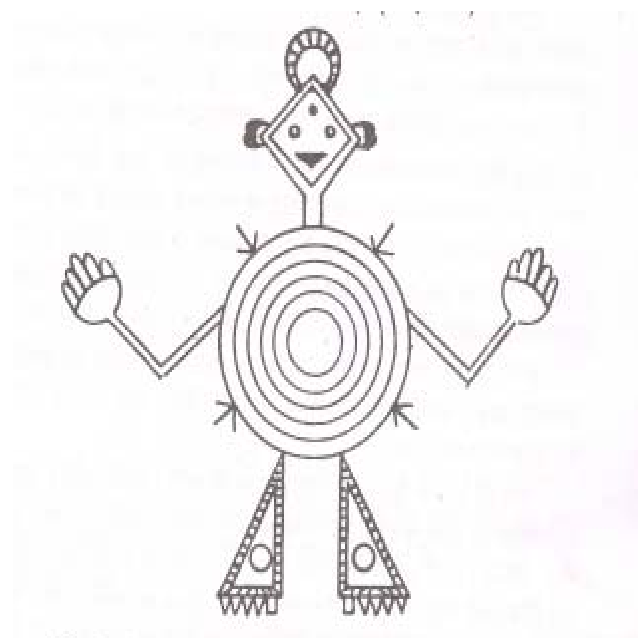

(२) कुआँ-पूजन

दशूठन-वरुण-पूजा (कुआँ-पूजन)-तीसरे नहान को करना चाहिए जब बच्चा कम-से-कम २१ दिन का हो जाय।

मूल-शान्ति-यदि बच्चा मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो, तो उसी नक्षत्र के आने पर मूल शान्ति भी करवायें और तभी कुआँ पूजन भी करें।

कुँआ पूजन के समय **खाँड़** के नाम से सामान भेजा जाता है। उसमें पीलिये की एक साड़ी, एक तीयल, बच्चे के कपड़े व कुछ आभूषण, खिलौने, एक साबुत गोला व २५० ग्राम शक्कर भेजी जाये। मूल शान्ति अगर होती है तो दामाद का जोड़ा व लड़की के लिये तीयल भेजी जाती है।

इस दिन जच्चा-बच्चा को उबटन लगाकर गर्म पानी से नहलाया जाय। कपड़े पहनाकर षष्ठी देवी की मूर्ति के पास पट्टे पर जच्चा को बैठाया जाय। एक कटोरी में कच्चे आटे की १४ पूरी तथा ११ रुपये रखकर हल्दी, चावल, व पानी से बायना काढ़कर नन्द को दें। हवन व देव-पूजन, नवग्रहपूजन आदि पति-पत्नी, दोनों बैठकर, बच्चे को गोद में लेकर करें।

हवन के बाद चार सुहागिन, दो बटुक और कम-से-कम दो ब्राह्मण खिलाये जायँ। इसके बाद जच्चा व कुटुम्ब-परिवार वाले भोजन करें। मंगल-गान किया जाय।

शाम को ४ बजे के लगभग पीहर से आयी सुही (पीली साड़ी) ओढ़ा कर जच्चा की गोद में खसखस व चावल देना चाहिए। इसी से वरुण की पूजा होती है। सौर घर के बाहर जो साथिये लगाये गये थे उनको उखाड़ लें। फिर उन्हें सूप या थाली में रखकर, यदि कुआँ पर जाकर पूजा की जाय, तो उसमें डाल दें। कुआँ के चारों ओर साथिया बनाकर बहू उस पर कुछ पैसे चढ़ाती है। ये नाइन लेती है।

घर में ही कुआँ-पूजन की रस्म यदि करनी हो तो मिट्टी के एक कूँड़े पर घड़ा रक्खें या हाँडी रक्खें। एक ढकने से उसे ढक दें। सबमें हल्दी लगाकर कलावा बाँधा जाता है। तब जच्चा उसकी पूजा करती है। सुहागिन महरी या किसी अन्य स्त्री से घड़े में जल भरवाकर कूँड़ा-करुआ पूजन करते हैं। घड़े का पानी व साथिया कोई (नाइन) कुआँ में डाल आवे और कुआँ पर साथिया हल्दी से बना दे।

बाहर कुआँ पूजने जाते समय बच्चे के पास उसका बाबा बैठता है। लौटकर आने पर जच्चा ससुर को भेंटस्वरूप कुछ देती है और ससुर आशीर्वाद देता है। आजकल कुओं पर जाने का प्रचलन नहीं के बराबर है, अतः यह प्रथा घर पर ही पूर्ण करने का रिवाज हो गया है।

उपस्थित मान्य महिलाओं को पैरों-पड़ाई पैर छूकर दी जाती है। कुआँ-पूजन करके लौटकर आने पर ५ लड़कों को जच्चा भीगे हुए चने दे। बच्चे स्वस्थ व ऊँचे वर्ण के होने चाहिए। मंगल गान होता है। उपस्थित लोगों को जलपान या भोजन कराकर स्वागत किया जाय।

कुआँ पूजन के बाद पीलिये की साड़ी पहनकर ही खाँड़ काढ़ने की प्रथा है। यह खाँड़ (शक्कर) दो-तीन घरों में दी जाती है।

आजकल अगनूं या सीमन्तोन्नयन संस्कार बच्चे के होने के बाद कुआँ पूजन के दिन करते हैं। कहीं-कहीं प्रथम वर्ष-गाँठ (बर्थ डे) के दिन करते हैं, जबकि इस संस्कार का महत्त्व नहीं रहता। अतः इस रस्म को समय पर ही करना चाहिये। अन्यथा न करें।

५. नामकरण

जब बच्चा २१ दिन का हो जाय, तब माता व पिता बच्चे को गोद में लेकर हवन करें। नाम रखने का आयोजन परिवार वालों को निमंत्रित करके करना चाहिए। आजकल तो लोग-बाग बच्चे के पैदा होते ही उसका नामकरण कर लेते हैं।

६. निष्क्रमण संस्कार

किसी शुभ दिन बच्चे को गोद में लेकर पिता बच्चे को चंद्रमा का दर्शन करावे। स्वयं देवदर्शन करे और बच्चे को भी दर्शन करावे।

छटूलनी फेरना—जिस वार को पहला नहान हुआ था उसी वार को चौथा नहान किया जाता है। चौथे नहान को जच्चा व बच्चा को स्नान कराकर देवी की मूर्ति के समीप बैठकर कच्चे आटे की १४ छोटी पूरी बनाकर व कुछ पैसे रखकर बायना काढ़ा जाता है। तीन बजे के लगभग नंद के यहाँ से जिस डलिया में छठी का सामान रखकर आया था उसी डलिया में कुछ रुपये और चार लड्डू रखकर नंद को वापिस करें।

देवी-पूजा—एक महीने का बच्चा होने पर सोमवार या शुक्रवार को देवी जी के मन्दिर में जच्चा बच्चे को लेकर पूजन करने जाय। देवी-पूजा में बासी गुलगुला व पूरी से पूजा की जाती है। उस दिन बासी भोजन ही खाया जाय।

किसी शुभ दिन में मायके की तरफ के किसी रिश्तेदार के यहाँ जाकर खिचड़ी खाने की रस्म पूरी की जाती है।

७. अन्नप्राशन

जब बच्चा ६ महीना का हो जाय, तब उबटन लगाकर स्नान करावे। पीले रंग का कपड़ा पहरावें।

आँगन में चौक पूरकर पट्टा बिछावे। बच्चे का बाबा उसे गोद में लेकर चाँदी या फूल की कटोरी में खीर लेकर चाँदी के चम्मच से खिलावे। बुआ आरता करे। माथे पर रोली से टीका लगावे। आरता में रुपये दिये जायँ।

८. मुंडन

६ महीने से पूर्व मुंडन नहीं होता है क्योंकि उस समय तक बच्चे के मस्तिष्क का भाग बहुत ही सुकोमल होता है। सातवें या ग्यारहवें महीने में मुंडन संस्कार करना चाहिए। बुआ बच्चे को गोद में लेकर नाई से बाल कटवाये। बाल कैंची से काटे जायँ। उतरे हुए बालों को लाल कपड़े में बाँधकर रख दें। नाई को चावल, गुड़ और रुपये दिये जायँ। नन्द को घी-गुड़ दिया जाय। कटे हुए बाल देवालय के पीछे या नदी में डाल दिये जायँ। नदी में डालने हों, तो आटे की लोई में बाल लपेटकर डाले जायँ।

मुण्डन के बाद बालक को स्नान करावें तथा नये स्वच्छ वस्त्र पहरावें। मुण्डन किये सर पर स्वास्तिक चन्दन या रोली से बना दें। यह कार्य किसी बुजुर्ग से कराया जाय।

शुक्र या बृहस्पति तारे के अस्त रहने के दिनों में मुंडन नहीं होता।

९. छठी (षष्ठी-पूजन) व कर्ण-छेदन

हम लोगों के यहाँ छठी करने की प्रथा है। छठी लड़के की की जाती है। आजकल यह देखा जा रहा है कि अक्सर छठी विवाह के अवसर पर ही करते हैं, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि लड़के की छठी बिना करे माता विवाह आदि के शुभ कार्य नहीं कर सकती। इसमें भी विवाह की तरह भात की चिट्ठी लिखी जाती है व हल्द-हाथ किया जाता है। पाँवड़े भी साढ़े चार किलो के बनाये जाते हैं। पाँवड़े, रतजगे में व छठी पहनते समय १ ब्लाउज सहित रखते हैं। मायदे की एक तीयल व रुपये भी रक्खे जाते हैं।

लड़के की छठी के अवसर पर रतजगा—दीवार को धोकर हल्दी-गोबर-मिट्टी से लीपते हैं। उस पर १ हाथ के लगभग चौकोर स्थान गेरू से पोतकर, मैदा-हल्दी के पानी में घोल (पठावा) से षष्ठी देवी की आकृति बनाते हैं।

लड़के की छठी के अवसर पर रतजगा

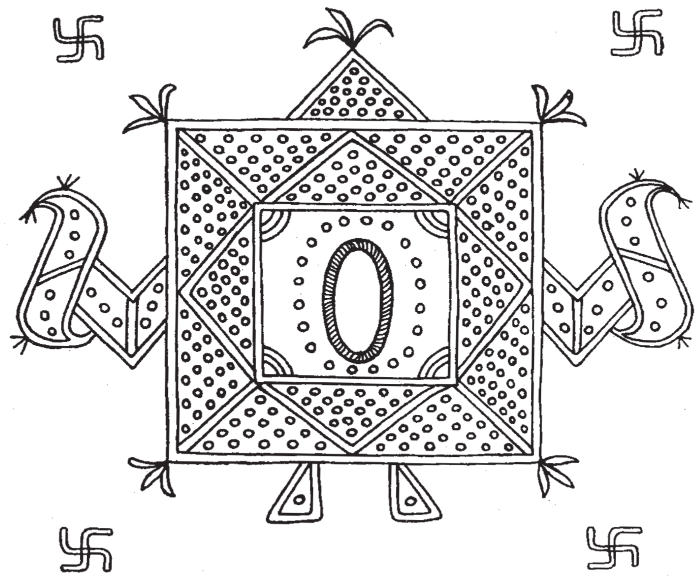

इस दिन पहली रात को रतजगा करते हैं। बुआ के यहाँ से आये कपड़े शिशु को पहनाये जाते हैं। बच्चे की माँ अपने पीहर से आयी पीलिये की धोती पहनकर पूजन करती है। सुबह-सुबह तारों की छाँव में दीवार पर गोबर से रखी षष्ठी देवी की पूजा की जाती है। गोबर व मिट्टी से दीवार (पूर्व, पश्चिम अथवा उत्तर की ओर की) लीपकर गोबर की स्त्रीरूप प्रतिमा (षष्ठी देवी) दीवार पर बनाकर रोली, चावल, हल्दी व जल से उसकी पूजा करें। पूजन कर दीपक जलाकर आरती करें। तेल, गुड़ व पैसे चढ़ाये जाते हैं। फिर प्रार्थना करें कि—'हे देवी तुम जगतजननी हो, बालक की रक्षा करो। इस बालक को बल, बुद्धि और तेज दो।'

छठी की पूजा के समय नन्द को सात नेग दिये जाते हैं (देवी स्थापना, कान छेदना, काँटा निकलवाना, कपड़े पहनाना, काजल डलाई, आरता तथा वार रुकाई)। यदि बहू के मयके से भाई–भावज भात लेकर आये हों, तो वे अपने बहनोई को तिलककर जोड़ा देते हैं। बहन को पीलिये की साड़ी उढ़ाते हैं; साथ ही एक तीयल बहन की व मेंहदी, चूड़ी दी जाती है। सास–ससुर को भी तीयल व जोड़ा देकर उनका सम्मान करते हैं। बहन के आरता करने पर थाली में रुपये डालते हैं और बहू भी अपने भाई–भतीजों को तिलक करके रुपये देती है व भावज को गोदी के रुपये देती है। छठी के अवसर पर फोकन्डी देने की भी प्रथा है।

छठी के इस कार्यक्रम के बाद बहू अपने सभी मान्य रिश्तेदारों के पैर छूकर उन्हें भेंट देती है। दिन में मंगलगान करें। सभी कुटम्बियों, रिश्तेदारों व अन्य लोगों को भोजन या जलपान करावें।

जिस प्रकार विवाह में भात की विदाई की जाती है उसी प्रकार इसमें भी भात की विदाई की जाय।

छठी पूजन क्यों ?

हिन्दू समाज में छठी संस्कार का विधान है। परन्तु क्यों ? **सुनिए—**इस दिन हम जिस देवी की पूजा–आराधना करते हैं वह हैं मूल प्रकृति के छठे अंश से उत्पन्न देवी ''षष्ठी'', जिसका अपभ्रंश होकर छटी या छठी कहा जाने लगा। ये ब्रह्मा की मानस कन्या थीं–वीरता, धीरता में प्रवीण हुईं और संसार पर शासन करने वाली थीं।

आदि काल में जब दैत्यों और देवताओं में भीषण युद्ध हुआ, तो इन्होंने देवताओं का पक्ष लेकर युद्ध किया और विजय प्राप्त की; तबसे इनका नाम देवसेना हुआ। इनके अनेक नाम और भी हैं—वालदा, विष्णु माया, सिद्धा, वीरसेना।

एक कथा और प्रचलित है—स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत ने विवाह तो कर लिया पर वे योगसाधन में लगे रहते थे। कश्यप जी ने उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ कराया जिसके प्रसाद से उनके एक पुत्र हुआ पर वह भी मरा हुआ। राजा प्रियव्रत मंत्रियों सहित मृत पुत्र को लेकर श्मशान गये और उसे गोद में रखकर छाती से चिपकाकर रोने लगे। षष्ठी देवी की कृपा से उन्होंने देखा कि एक सुन्दर मणियों से जड़ा चमचमाता विमान समीप ही उतरा जिस पर श्वेतवर्ण वाली नवयौवना प्रसन्न मुखवाली एक स्त्री विराजमान है। उनका एक हाथ भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए उठा था। देवी को सम्मुख देखकर मृत पुत्र को भूमि पर रख राजा उठे और उस देवी की पूजा–वंदना और स्तुति की। फिर पूछा कि–''हे शोभने ! आप कौन हैं ? यहाँ आने का क्या कारण है ? तुम्हारे पिता व पति का क्या नाम है ? बताने की कृपा

कीजिए।'' देवी षष्ठी ने बताया कि मैं ब्रह्मा की मानसी पुत्री हूँ। मेरे पति स्वामी कार्तिकेय हैं। मैं नव मात्रिकाओं में से छठी हूँ। मुझमें बालकों को बल, तेज, बुद्धि, आयु देने की क्षमता है। मेरे आशीर्वाद से पुत्रहीन पुत्र पा सकता है, दरिद्र धन, कर्मशील उत्तम फल, प्रियाहीन पुरुष सुचरित्र पत्नी प्राप्त कर सकता है, रोगी रोगमुक्त हो जाता है। देवी ने भूमि से मृत पुत्र को उठा कर उसको जीवनदान दिया। बालक के शरीर में गति आ गयी, वह हँसने लगा। उसे पुनः जीवित देखकर राजा के हर्ष का पारावार न रहा। उनका शरीर प्रसन्नता से काँपने लगा, होठ व गला रोते–रोते रुँध गया। वह हाथ जोड़कर देवी की ओर देखने लगे। देवी बालक को लेकर खड़ी हो गईं। अब राजा घबराये कि क्या ये इसे ले जायेंगी। उनकी विनती करने लगे, तो देवी ने कहा, ''तुम संसार में मेरी पूजा का प्रचार कराओ इससे बालकों का कल्याण होगा। तुम स्वयं भी पूजा करो और संसार में प्रचलित करो तब मैं यह बालक दूँगी।'' राजा ने उन्हें वचन दिया कि ऐसा ही करूँगा और वहीं पर उनकी मानसिक पूजा की। घर आकर ब्राह्मणों को बहुत–सा धन–दान किया तथा धूम–धाम से छठी पूजन का मांगलिक कार्य किया। देवी ने उस बालक का नाम सुव्रत रखवाया (सु = अच्छा, व्रत = नियम)। तभी से देवी की पूजा की प्रथा बालक होने के छठे दिन की जाने लगी।

१०. विद्या आरम्भ

पुत्र या पुत्री की तीन वर्ष से चार वर्ष की अवस्था के मध्य किसी समय भी यह संस्कार कर देना चाहिए। शुभ तिथि व दिन देखकर गणेश जी व सरस्वती जी का पूजन, योग्य पंडित द्वारा, बच्चे से करवायें। सबसे पहले कलम, दवात व पट्टी की पूजा कराई जाय, फिर तख्ती या स्लेट पर लाल चन्दन या खरिया से ''ॐ '' या ''श्री'' अक्षर लिखाकर विद्या आरम्भ करानी चाहिए। इस संस्कार को **'पट्टी पूजन'** का नाम भी दिया गया है।

११. यज्ञोपवीत संस्कार

यज्ञोपवीत शब्द 'यज्ञ' और 'उपवीत' इन दो शब्दों के संयोग से बना हुआ एक शब्द है; जिसका अर्थ है–'यज्ञ को प्राप्त करने वाला'। यज्ञ के लिए जो सूत्र (जनेऊ) धारण किया जाय, जिससे मनुष्य को यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त हो, उसे यज्ञोपवीत कहा जाता है। इसे **'उपनयन संस्कार'** भी कहते हैं। यह संस्कार उस समय किया जाता था जब बालक शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरु के समीप भेजा जाता था। इस संस्कार के पश्चात् बालक का नवीन जन्म माना जाता है और यह संस्कार आचार्य के द्वारा कराया जाता है। जब बालक गुरु के पास जाता है तो उसे नवीन वस्त्र

दिया जाता है तथा गुरु उसे मंत्र प्रदान करता है। तदुपरान्त बालक द्विज कहलाने का तथा शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है।

शास्त्रों में लिखा है कि ब्राह्मण बालक का जन्म से ५वें वर्ष में, क्षत्रिय का छठे वर्ष में तथा वैश्य का ८वें वर्ष में किसी योग्य पंडित से उपनयन संस्कार कराया जाना चाहिए।

ब्रह्मचर्य सकामस्य कार्य विप्रस्य पंचमे।
राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे।।

इस संस्कार के समय बालक का मुंडन कराया जाता है, और एक शिखा* के बाल रहने दिये जाते हैं। बालक को स्नान कराकर नये वस्त्र पहनाये जाते हैं। किसी पण्डित या आचार्य द्वारा उसे बताया जाता है कि अब बालक को ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करना है। जो बालक ब्राह्मण होता है उसके घास की मूँज का, जो बालक क्षत्रिय होता है उसके धनुष की डोरी का तथा जो वैश्य होता है उसके ऊन का धागा, कमर पर बाँधा (मेखला) जाता है।

बालक को कोपीन धारण कराई जाय। कोपीन अर्थात लंगोट बाँधना ब्रह्मचर्य पालन का प्रतीक है। मेखला–कोपीन के बाद बालक को दण्ड (छोटी–सी लाठी) धारण कराया जाता है। इसका अर्थ है कि दैनिक उपयोग में जानवर आदि व अवसर पड़ने पर अपनी रक्षा इसके द्वारा की जा सके तथा बालक को शूरवीर बनने का भी बोध कराया जाता है।

बालक को सूर्य दर्शन कराया जाता है व सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। सूर्य दर्शन प्रतीक है—सूर्य के समान तेजस्वी बनने का, गतिशील रहने का, स्वयं प्रकाशित होने तथा साथ–साथ अपने प्रकाश (ज्ञान) से दूसरों को प्रकाशित करना आदि प्रेरणाओं का।

यज्ञोपवीत धारण एवं मंत्र दीक्षा— पंडित जनेऊ को जल तथा गंगा जल से पवित्र करके उसे हाथ के बीचों–बीच रखकर १० बार गायत्री मंत्र

***शिखा** का अर्थ है – शिखर यानी लक्ष्य पर पहुँचना। जब तक मनुष्य के सामने लक्ष्य निर्धारित नहीं होता तब तक वह उन्नति के मार्ग में तत्पर नहीं होता। इस समय बालक का ध्येय पढ़–लिखकर ज्ञान–अर्जन करना होता है।

से शुद्ध व अभिमन्त्रित करे। पाँच सुसंस्कारी व्यक्तियों द्वारा इस यज्ञोपवीत को बालक को पहनाते हैं। गायत्री मंत्र है—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

मंत्र के यही नौ शब्द जनेऊ के नौ सूत्र (६ धागे व ३ गाँठें) के प्रतीक हैं। यज्ञोपवीत के नौ धागे निम्न नौ गुणों के प्रतीक भी हैं—

(१) विवेक	(२) पवित्रता	(३) शान्ति
(४) साहस	(५) धैर्य व स्थिरता	(६) कर्तव्यनिष्ठा
(७) बलिष्ठता	(८) समृद्धि व	(९) सामूहिकता।

इन गुणों को अपने में विकसित करने का ध्यान सदैव बना रहे, यह जनेऊ के 9 धागे स्मरण कराते रहते हैं।

जनेऊ के विषय में लड़कों को पंडित जी खूब समझाकर जनेऊ का महत्त्व बतावें तथा धारण करने का मंत्र तथा जनेऊ पुराना हो जाने पर उसे बदलने का मंत्र भी समझा दें। उन्हें यह भी बतावें कि यदि मृतक को छू लिया है या दूषित वस्तु–स्पर्श जैसे नाली में गिर जाना, मलमूत्र से छू जाना, आदि के अवसर आ जायँ, तो स्नान करके जनेऊ निम्न मंत्र के साथ बदल लेना उचित है—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्मग्रयं प्रति मुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

जब तक क्वारे हैं (यानी विवाह नहीं हुआ है) तब तक आधा जनेऊ ही धारण करना चाहिए। (जनेऊ में तीन–तीन तार वाले गाँठ लगे दो हिस्से होते हैं, अतः जनेऊ जोड़ा कहलाता है)। अविवाहित लड़के जनेऊ का एक हिस्सा ही पहनते हैं। इसका अर्थ है कि विद्या अर्जन करते समय बालक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। विवाह के बाद जनेऊ का जोड़ा धारण किया जाता है।

लघुशंका या शौच आदि के समय जनेऊ को दाहिने कान पर चढ़ा लेना चाहिए।

१२. मनुष्य-जीवन का अन्तिम संस्कार (अन्त्येष्टि)

मरणकाल का ज्ञान होने पर –

१. उपस्थित जनों को भगवत् नाम-स्मरण करना चाहिए और यदि मरणासन्न में सुनने व बोलने की शक्ति है तो उससे भी कहलाना चाहिए।

२. तुलसीदल पीसकर गंगाजल में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिए, इससे साँस निकलने में शान्ति मिलती है।

३. गले में तुलसी की माला पहनानी चाहिए।

४. पास में तुलसी का पौधा रक्खें, इससे वहाँ की वायु शुद्ध हो जायगी।

५. दिन हो या रात, घी का दीपक जलाकर रखना चाहिए।

६. मरणासन्न को पलंग से नीचे उतार कर लिटा दें तथा पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहिये।

७. धरती शुद्ध करके (साफ करके गंगाजल व काले तिल, छिड़ककर कुशा बिछाकर) एक धुली सफेद चादर पर मरणासन्न को लिटा दें।

८. दान-पुण्य जो हो सके करवा देना चाहिए। (गाय को घास, अनाथों को द्रव्य, भूखे को भोजन आदि)

प्राण निकलने के पश्चात् –

१. मरने के बाद मृतक की आँख या मुँह खुला हो, तो उसे बन्द कर दें। नाक रुई से बन्द कर देनी चाहिए।

२. मल-मूत्र हो गया हो, तो शुद्ध कर दें।

३. मुँह को चादर से ढक दें।

४. दोनों हाथ उसके बगल में सटा दें तथा पैर के अँगूठों को आपस में बाँध दें। नाभि पर नमक की पोटली रखने से शरीर में सड़न देर से होती है।

५. मृतक के चारों ओर काले तिल, सरसों/राई तथा हल्दी की रेखा खींच दें, चींटी वगैरह नहीं आयेंगी।

६. मृतक के सिरहाने तुलसी जी का पौधा रखना चाहिए और घी का दीपक पास में जलायें।

७. धूप/अगरबत्ती जलायें।

८. जहाँ तक हो सके भजन करें या इनके कैसेट, सी.डी. लगा दें। इससे मृत आत्मा को शान्ति मिलती है।

९. पंडित से पता करें कि मृत्यु पंचक में तो नहीं हुई। अगर पंचक हो, तो ५ पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं। यह पूजा पंडित करा देते हैं।

१०. यदि दाहकर्म में २० घण्टे से अधिक हों तो मृत शरीर को बर्फ पर रख देना चाहिए।

११. इष्ट मित्रों, सम्बन्धियों को सूचना देनी चाहिए।

१२. मृत्यु की तिथि जिस दिन मृत्यु हुई हो उसी दिन से माननी चाहिए, दाग देने के दिन से नहीं।

दाह कर्म –

हर शहर में कई दुकानें ऐसी होती हैं जहाँ दाहकर्म का सभी सामान एक ही स्थान पर मिल जाता है।

सामान की सूची–

१. कम से कम पाव भर फूल; ४-५ लड़ फूल मालाएँ, १०-१२ पान।

२. इत्र की शीशी, चन्दन, कपूर, गुलाब जल की शीशी, थोड़ा शहद।

३. दूध, दही, शक्कर, घी, ५०० ग्राम जौ का आटा (पिण्ड बनाने को), ५० ग्राम काला तिल।

४. कपूर ५० ग्राम, हवन सामग्री ४-५ पैकेट, मखाने, गोले या नारियल पाँव पूजने के लिए, २ जनेऊ, १०० ग्राम कलावा।

५. चन्दन की लकड़ी के ५-६ टुकड़े, तुलसी की लकड़ी, देशी घी (२ किलो का डिब्बा), शक्कर डेढ़ किलो, राल दो किलो।

६. मुख में रखने को पंचरत्नी।

७. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो मेंहदी, सिन्दूर, तेल, कंघी, चूड़ा, नथ, बिन्दी, चुन्दड़ी।

८. विधवा के ऊपर डालने के लिए शाल।

९. पैर पूजने वाली जितनी स्त्रियाँ हों उतने नारियल लेने चाहिए।

१०. यदि मृतक वृद्ध हो तो चाँदी–सोने के फूल व मखाने आदि भी होने चाहिए। वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर अपना सेवाभाव दर्शाते हैं।

११. दाह कर्म करने वाले के लिए पहनने की १ धोती, १ बनियान, डेढ़ मीटर अंगोछे के रूप में सफेद कपड़ा, पैरों में पहनने की चप्पल, जनेऊ, चाकू, थाली और लोटा चाहिए।

१२. मृतक का बड़ा पुत्र ही मुखाग्नि देता है और सभी कार्य करता है। यदि किसी कारणवश वह उपस्थित न हो, तो सबसे छोटा पुत्र या दोनों की अनुपस्थिति में कोई भी पुत्र या निकट संबन्धी क्रियाकर्म करता है।

अर्थी –

१. ७ फुट लम्बे २ बाँस तथा लगभग ३ फुट लम्बे ८–१० बाँस के टुकड़े।

२. अर्थी पर बिछाने के लिए पतवार तथा नया सफेद कपड़ा (७–७१/२ मीटर कपड़ा ठीक रहता है) लाश के ऊपर व नीचे के लिए (२–२१/४ मीटर नीचे, २–२१/४ मीटर ऊपर, लगभग १/२ मीटर सर बाँधने के लिए, ११/२ मीटर कमर में बाँधने के लिए, ११/२ मीटर कुरते के लिए)

३. अर्थी बाँधने के लिए दो गोले बान और कलावा। कलावा बान के साथ लपेटा जाता है। बाँधते समय फूलमाला की भी आवश्यकता होती है।

४. जो दो लम्बे बाँस लाये गये हैं, उनको किसी वस्तु (ईंट) आदि पर रखकर उसमें छोटे (३ फुट) वाले बाँस हर १०"-११" पर कलावा लिपटे बान से मजबूती से बाँधा जाय। सर के नीचे का बाँस का टुकड़ा फटा नहीं होना चाहिए।

५. एक घड़ा।

– सामान आ जाने पर क्रिया करने वाले की नाई द्वारा हजामत (शेव) बनवायी जाती है। इस कार्य में संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि यह मृतक के प्रति सम्मानसूचक प्रथा है और क्रिया करने वाले की पहचान भी।

– दाह कर्म करने वाला स्नान करे, स्वच्छ कपड़े पहन, जनेऊ धारण करे।

– मृतक को स्नान करवाये। मिट्टी के एक घड़े में पानी भरकर बायें

हाथ से लायें और मृतक को स्नान पैर की ओर से शुरु करके सिर तक कराये। मृतक अगर स्त्री है तो पुत्र ही स्नान कराये, परन्तु वस्त्र बहुयें या परिवार की स्त्रियाँ पहनायें।

– मृतक पुरुष का जनेऊ, यदि पहने हो तो पैर की ओर से उतारा जाय और नया जनेऊ जोड़ा गले से पहनाया जाय।

– पहने हुए कपड़े निकालकर नये कपड़े पहनाये जायें। माला, चन्दन, इत्र लगाकर अर्थी पर लिटाया जाय। पैर दक्षिण दिशा की ओर होने चाहिए।

– सुहागिन स्त्री को लाल साड़ी, फूल माला पहना कर श्रृंगार करें। पति माँग में सिंदूर लगा दें। अर्थी पर मृतक को लिटाकर ऊपर से चुँदड़ी डाली जाय।

– यदि मृतक विधवा हो, तो माथे पर चन्दन, गले में फूल व तुलसीमाला, सफेद साड़ी पहनायें। उसे सजावें। अर्थी पर लिटाने के बाद सफेद कपड़ा डाला जाय और ऊपर से शाल डाला जाता है।

– यदि मृतक गर्भिणी हो, तो गर्भस्थ शिशु को डाक्टर द्वारा निकलवा देते हैं। बालक को अलग करके ही स्त्री का दाह कर्म किया जाता है। मृत शिशु को श्मशान में ही गड्ढे में ३-४ किग्रा नमक डालकर गाड़ देते हैं।

– यदि मृतक ३ वर्ष से कम उम्र का बालक है, तो उसे सफेद वस्त्र में लपेट कर और यदि कन्या हो तो उसे लाल वस्त्र में लपेट कर श्मशान ले जाते हैं। गड़ढा खोदकर लगभग ५ किलो नमक डाल कर उसे लिटा देते हैं। लाश के ऊपर भी कुछ नमक डालते हैं। लिटाकर ऊपर से पत्थर रख देते हैं, ताकि कोई जानवर उसे खोद कर न निकाल सके।

– किशोर बालक के मरने पर पिण्डदान व अन्य सभी कार्य करने चाहिये। केवल मृतक के पिता के जीवित रहने पर सपिंडन नहीं होता।

पिण्ड दान – बाजार से आये जौ के आटे को थाली में रखकर उसमें काले तिल, दूध, घी, शक्कर, शहद, दही, मिलाकर पानी से गूँध कर उसके

पाँच पिण्ड* बना लिये जायँ। पिण्ड फल के जितना बड़ा होना चाहिए। किसी पंडित द्वारा संकल्प मंत्र के साथ पिण्ड-दान करें।

क्रिया करने वाला दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बायाँ घुटना टेककर बैठ जाय और जनेऊ दाहिने कंधे पर रखकर (अर्थात् अपसव्य होकर) हाथ में कुछ पैसे, कुछ तिल, व जल लेकर पहले संकल्प करे।

संकल्प मंत्र—

ॐ अद्य अमुकमासे पुण्यक्षेत्रे संवत्सरे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक-वासरे, अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं प्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्तये उत्तमलोक-प्राप्त्यर्थे औद्रर्ध्वदैहिककर्मं करिष्ये।

तिल व जल पृथ्वी पर छोड़ दें। फिर दूसरी बार हाथ में जल, तिल व एक पिण्ड लें और निम्न मंत्र के साथ दाह कर्म करने वाला दक्षिण की ओर मुँह करके पहला पिंडदान करे :—

ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेत-मृतस्थाने एष पिण्डो मया दीयते तवो प्रतिष्ठताम्।

इस पिण्ड को अर्थी के कपड़े के नीचे दायें हाथ के पास रख दें।

प्रत्येक पिण्ड के बाद निम्न कहना आवश्यक है—

अनेन पिण्डदानेन प्रेतस्य सद्गति उत्तमी लोक प्राप्ति।

उसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर दूसरे पिण्ड को अरथी के कपड़े के बायें हाथ के पास नीचे रक्खें :—

ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेत अत्र प्रत्यवने निश्वमया दीयते तवो प्रतिष्ठताम्।

पुत्र तथा निकट सम्बन्धी, जो कंधा देने वाले हों, अर्थी को उठाकर आँगन में रखें और सब लोग अर्थी की परिक्रमा करें। अब मृतक को अर्थी पर कफन उढ़ाकर बान में कलावा मिलाकर उससे कसकर बाँधा जाय, फूलमाला व पान से सजाया जाय।

वृद्ध मृतक के कान में नाती शंखनाद करते हैं, ऐसी हम हिन्दुओं में प्रथा है। इसका अर्थ यह है कि यदि संयोगवश शरीर के किसी अंग में प्राणवायु स्थिर रह गई है, तो वह कान में शंख की आवाज पहुँचने पर निकल जाय।

पैर पूजना— अर्थी पर मृतक को बाँधने के बाद तथा दो पिण्ड हो जाने के बाद बेटा, पोता, नाती, भांजे आदि पैर छूते हैं। पैर पूजन में मृतक पुरुष की स्त्री सबसे पहले लाल रंग के कपड़े के टुकड़ों के साथ रुपये-पैसे रखकर पैर पूजती है। मृतक की स्त्री की चूड़ियाँ व उसके बिछिये अर्थी में रख दिये जाते हैं। फिर घर की सब बहुएँ रुपये-पैसे व नारियल से पैर पूजती हैं। घर की अन्य बहुएँ, बेटे व अन्य लोग भी पैर पूजकर मृतक के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। मृतक स्त्री के पैर कपड़े व गोले से पूजे जाते हैं। पैर पूजकर उल्टी परिक्रमा करते हैं (अर्थात् दाहिने से बायीं ओर)।

वृद्ध मृतक के ऊपर पोते चंवर हिलाकर उसकी वायु से मक्खी-मच्छर आदि जीवों को हटा कर अपना सेवा-भाव दर्शाते हैं। मरने वाले के कपड़े क्रिया करने वाला या मृतक की विधवा स्त्री घर के दरवाजे के बाहर रख दे।

भगवान का स्मरण कर मृतक की अर्थी को कंधा देने वाले पुनः उठाकर घर से बाहर ले जावें। यदि मृतक वृद्ध हो, तो चाँदी-सोने के फूल व मखाने तथा रेजगारी अर्थी के ऊपर से बिखेरते हैं। राह में पीपल के पेड़ के नीचे अर्थी रखकर विश्राम कराते हैं और निम्न मंत्र द्वारा तीसरा पिंड दें :—

ॐ अमुक गोत्रे अमुक प्रेत पथ निमित्तक विश्राम स्थाने एष पिंडों मयादीयते तवोप्रतिष्ठताम्।

एक घड़े में जल भरकर जल की एक धार छोड़ते हुए क्रिया करने वाला अर्थी की उल्टी एक परिक्रमा करे व घड़े को पैरों की तरफ ले जाकर फोड़ दें। इसके बाद शव की अर्थी को घर के वे ही चार लोग उठावेंगे जिन्होंने घर पर अर्थी को सर्वप्रथम कन्धा दिया था। केवल कंधा देने वाले आपस में बदल जाते हैं अर्थात् पीछे वाले आगे तथा आगे वाले पीछे जाकर अर्थी उठाते हैं।

आजकल प्रायः अर्थी लाश की गाड़ी में श्मशान घाट ले जाते हैं। यह ध्यान रखें कि इस समय सिरहाना आगे की ओर और पैर पीछे की ओर हों।

श्मशान घाट पर पहुँचने पर अर्थी को जमीन पर स्वच्छ स्थान पर रख दें और एक बार पुनः नदी के जल से स्नान करावें या यदि नदी आदि न हो तो गंगा जल के छींटे दें। ६ या ११ मन (१ मन = ४० किग्रा के लगभग) लकड़ी से चिता बनावें।

भगवान का स्मरण कर अर्थी के बंधन खोलकर मृतक को ऊपर नीचे वाले कपड़े समेत ही चिता पर लिटा दें। चिता पर मृतक को रखने के बाद सर्वप्रथम क्रिया करने वाला लकड़ी रखता है फिर अन्य लोग शव की चिता पर लकड़ी रखते हैं। चिता पर फिर अंतिम दो पिंड (दायें व बायें हाथ के पास) दिये जाते हैं।

अमुकगोत्रे अमुकप्रेत चितास्थाने एष पिण्डस्ते मया दीयते तवो प्रतिष्ठताम्

यदि मृत्यु के समय पंचक हों, तो कुशा के ५ पुतले बनाकर मृतक के पास चिता में रख दिये जाते हैं।

मृतक के शरीर के ऊपर घी में भिगोकर चन्दन के टुकड़े रखे जाते हैं। यदि तुलसी की सूखी लकड़ी हो, तो उसे भी रख लें। कपूर, धूप आदि भी रखते हैं, पाँचों पिंड इकट्ठे करके शव के दक्षिण कोख में रख देते हैं।

क्रिया करने वाला फूस में आधा छटाँक कपूर रखकर उसे जला कर फूस को हाथ में लिये-लिये चिता की उल्टी परिक्रमा करे जिससे कि परिक्रमा के समय शव के व दाग देने वाले के बीच में बायाँ हाथ रहे। फिर जलते कपूर द्वारा फूससहित सर्वप्रथम मृतक के सिर की ओर से अग्नि दे। महाब्राह्मण यहाँ का सारा कार्य कराता है। चिता की अग्नि को अच्छी तरह प्रज्वलित करने के लिए राल, शक्कर व घी डालते हैं। हवन सामग्री भी डाली जाती है, जिससे वातावरण शुद्ध हो जाय।

जब महाब्राह्मण बतावे कि कपाल क्रिया के लिए मष्तिष्क पक गया है, तो एक बाँस को घी में भिगोकर उससे कपाल क्रिया की जाती है। घी की पाँच आहुतियाँ दी जाती हैं। शव की परिक्रमा करके महाब्राह्मण को सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा दें। फूस आदि के पैसे भी दे दें। लाश जल जाने के बाद घर लौटना चाहिए। यदि इसी समय उठावनी का दिन व समय निश्चित कर लें तो अच्छा होगा। इससे सभी उपस्थित सज्जनों को इसकी सूचना उसी समय हो जाती है और अन्य लोगों तक भी उसकी सूचना उनके द्वारा हो जाती है। उठावनी प्रायः तीसरे दिन होती है पर उस दिन मंगल या वृहस्पतिवार न पड़े।

क्रियाकर्म करके लौटते वक्त –

- रास्ते में नहाने का प्रबन्ध हो तो नहाकर अथवा हाथ-पैर धोकर सभी कुटुम्बीजन तिल की अँजली देते हैं।
- बायें हाथ की छोटी उँगली से नीम की पत्ती को चखकर थूक देते हैं।
- घर लौटकर आने तक घर की स्त्रियाँ नहाकर तिल की अँजली देती हैं, नीम की पत्ती चबाती हैं और फिर घर के आँगन में कुछ बिछाकर बैठी रहती हैं।
- भुने चने घर वाले खाते हैं।
- खाने का सामान आटा, दाल (उड़द की छिलके वाली), घी, नमक, मिर्च, दियासलाई, पत्तल, कुल्हड़ आदि सामान उतना लाया जाता है जो उस समय के लिए पर्याप्त हो। चौके में बने खाने में हल्दी नहीं पड़ती और न ही छौंक लगाया जाता है कढ़ाई भी नहीं चढ़ती। बचा खाना प्रयोग न करें। इस सब सामान की कीमत मृतक के ससुराल वाले या बेटे के ससुराल वाले देते हैं। जिस घर में मृत्यु हुई हो उस घर की बहुएं भोजन न बनायें। कोई आयी हुई बेटी या अन्य कोई महिला बना दें।
- खाना बनाने के बाद चूल्हे पर तवा उल्टा रख देते हैं। बर्तन दूसरे दिन ही साफ करते हैं। शाम को घर में खाना नहीं बनता, कहीं बाहर से मंगा लें।
- ४ रोटी और दाल से गौ-ग्रास दिया जाता है। कंधा देने वाले रिश्तेदार पहला ग्रास बायें हाथ से मुँह में रखकर थूक देते हैं। यह **कड़ुआ ग्रास** कहलाता है। फिर सब घर वाले भोजन करते हैं।
- कड़ुआ ग्रास प्रथम दिन, उठावनी के दिन, नौनहाने के दिन व द्वादशे वाले दिन ही होता है।
- प्रतिदिन पहले गौ-ग्रास देकर ही खाना खाया जाता है।
- मृतक की पत्नी तथा क्रिया-कर्म करने वाले को १२-१३ दिन तक संयम से रहना चाहिए। रोज स्नान कर, किसी को बिना छुए, तख्त या जमीन पर सोना चाहिए।

अस्थि संचय – दाह कर्म करने के अगले दिन प्रातःकाल परिवार के पुरुष श्मशान में अस्थि संचय (संग्रह) के लिए जाते हैं। निम्न सामान साथ ले जाना जायें :–

१. १ रेशमी टुकड़ा रूमाल के बराबर, दो बड़ी थैली, जिसमें ३१/२ किग्रा सामान आ जाये, १ थैली छोटी जिसमें १ किग्रा सामान आ जाये।
२. इलायची, लौंग, कलावत्तू, छोटी खड़ाऊ, फावड़ी, चपटी धूपबत्ती।
३. १० दिये, कड़ुआ तेल, तिल, चावल, काले उड़द।
४. २००-२५० ग्राम दही, २००-२५० ग्राम कच्चा दूध, गंगाजल।
५. ४ पत्तल, ५ फल, २५० ग्राम हरा पालक।
६. १ व्यक्ति का भोजन।
७. खोये की सफेद बरफी २५० ग्राम।
८. आठ बलि देने के लिए उड़द या चावल का बना सामान।
   – महाब्राह्मण द्वारा पिण्डदान।
   – आठों दिशाओं में प्रतीकात्मक बलि दी जाती है।
   – फिर अस्थि संचय।
   – सिर की अस्थि को उठाकर दूध व गंगाजल से एक कूंड़ या तसले में धोकर सफेद कपड़े की छोटी थैली में रखते हैं।
   – बड़ी थैली में पहले छोटी थैली को रखकर फिर अन्य अस्थियाँ धोकर, पोंछकर भरते हैं।
   – बची भस्म भरकर नदी या जल में डाल देते हैं।
   – महाब्राह्मण को भोजन कराया जाता है और दक्षिणा दी जाती है।
   – अस्थियाँ घर नहीं लायी जातीं। मंदिर या गुरुद्वारे के सुरक्षित स्थान पर रख देते हैं।
९. स्नान कर घर लौटें, गऊ ग्रास देने के बाद ही भोजन करें।
१०. तेरहीं से पहले किसी भी दिन जाकर गंगाजी में उन अस्थियों का विसर्जन कर देना चाहिए।

घट बाँधना– शाम को नदी या किसी कुएँ के पास पीपल के पेड़ में एक हाँड़ी में जल, फूल व चन्दन डाल कर बाँध देते हैं। हाँड़ी में एक छेद

किया होता है जिसमें सूत डाल देते हैं, जिससे हाँड़ी से पानी एक-एक बूंद टपकता है। एक दीपक भी जला दिया जाता है। इसे **'घट बाँधना'** कहते हैं। दसवें के रोज तक प्रतिदिन इस हाँड़ी में पानी भरा जाता है। महाब्राह्मण को प्रतिदिन भोजन कराया जाता है। वह पिंडदान व पूजा कराता है। शाम को दीपक जलाया जाता है व घट को पानी से पुनः भर देते हैं।

उठावनी–

१. मृत्यु के बाद, तीसरे दिन शाम को ४ बजे के लगभग नातेदार, बिरादरी व जान–पहचान वाले एकत्र होते हैं।
२. भजन आदि करें और मृतक को श्रृद्धांजलि दें।
३. तीसरे दिन मंगल या बृहस्पतिवार होने पर उस दिन उठावनी नहीं की जाती है, एक दिन पहले कर लेते हैं।
४. इसी दिन बाहर वालों को सूचना-पत्र (चिट्ठी) लिखते हैं, जिसमें मरने की सूचना व तेरही की तिथि लिखी जाती है।
५. एक लोटे में पानी भरकर नाई या कोई नौकर लाता है। सर्वप्रथम क्रिया करने वाला बायें हाथ की छोटी उंगली से जरा-सा पानी आँख में छुआता है और लोटे में पैसे डालता है। इसे **आँख ठंडी करना** कहते हैं। सभी निकट सम्बन्धी व घर की स्त्रियाँ भी आँख ठंडी करती हैं।
६. मृत आत्मा की शान्ति–कामना करने सभी मंदिर में भगवान के दर्शन के लिए जाते हैं।
७. मंदिर लौटते समय हरे पत्ते वाला साग जहाँ पर घट बाँधा है, उधर रख देते हैं या गाय को दिया जाता है। इसे खाया नहीं जाता।
८. उठावनी के बाद चौथे दिन से घर की रसोई में साग आदि बन सकता है। लेकिन छौंक नहीं लगता, न ही कढ़ाई चढ़ती है।
९. यदि गरुड़ पुराण या गीता का पाठ करना हो, तो इसी दिन से शुरू करते हैं। बारवां या तेरही पर उसकी समाप्ति होती है।

अस्थि विसर्जन– अस्थि का प्रायः गंगा जी में विसर्जन किया जाता है। पुत्र, निकट संबंधी गंगाजी जाकर अस्थि की थैली को गंगाजी की मध्य धारा में विसर्जन कर दें। यह कार्य उठावनी के बाद कर देना चाहिए। विसर्जन के बाद वहीं पर ब्राह्मण को भोजन कराकर उसको दक्षिणा देनी चाहिए।

नौनहाना–

१. घर के पुरुष बाल बनवाकर नहाते हैं।

२. नीम की पत्ती चबाकर घर वापस लौटते हैं।

३. इस दिन भुने आटे (पंजीरी) से कड़ुआ ग्रास होता है।

४. नौनहाने के दिन प्रातःकाल घर की बहन-बेटियाँ **'आँट मीट'** खोलती हैं। सिर से नहाकर शृंगार (काजल, बिन्दी, माँग भरना आदि) करती हैं व कढ़ाई में पूरी, कचौरी आदि बना सकती हैं। अगर अपने ससुराल में हो।

दसवां या ग्यारवां (एकादशा) –

– कुछ लोग दसवें दिन यह कार्य करते हैं और कुछ ग्यारहवें दिन।

– महाब्राह्मण द्वारा सपिंडी का कार्य करवाया जाता है।

दसवें पर दान का सामान – (ज्यादातर पुराना सामान लेकिन अच्छी अवस्था वाला)

– चारपाई, दरी या गद्दा, चादर, तकिया, ओढ़ने की चादर या रजाई (पुरानी या नई)

– थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच।

– छतरी, लकड़ी की छड़ी, चप्पल या खड़ाऊँ, लैम्प (टार्च)।

– शीशा, कंघा, चन्दन माला, आसन, तेल।

– अन्न और गऊ दान के निमित्त कुछ धन।

– यदि मृतक स्त्री हो तो 'सुहाग पिटारी' इसमें चूड़ी, मेंहदी, बिन्दी, बिछिया, कलावा होता है।

– कुछ फल मिठाई भ्ज्ञी महाब्राह्मण को सामर्थ्यानुसार दक्षिणा के साथ दे दें।

पूजन के लिए सामान– जौ का आटा ढाई किग्रा, ढाक के पत्ते, दोने, दूध, दही, शहद, गंगाजल, रूई जिसमें ३६० बत्ती बने, कड़वा तेल, पान।
– यदि रोज एक आदमी का खाना नहीं दिया हो तो ११ आदमियों का खाना होगा। कुछ फल, मिठाई महाब्राह्मण को दक्षिणा के साथ देने को।

कांटी– ग्यारवां की रात को मृतक-स्थान को धोकर साफ किया

जाय। रात को कांटी जलाई जाती है। यह कार्य किसी योग्य कर्मकाण्डी पंडित द्वारा कराना चाहिए। इस समय केवल क्रिया करने वाले तथा पंडित ही उपस्थित रहते हैं, घर का कोई भी सदस्य इस कार्य को नहीं देखता। (यदि तेरहीं कर रहे हों, तो यह कार्य बारवां की रात को किया जाता है।) सुबह कांटी का सब सामान नदी में प्रवाहित कर दें।

बारवां (द्वादशा) या तेरहीं–

– पुरुष की तेरहीं कुछ लोग १२ दिन की करते हैं और कुछ तेरहवें दिन।

– स्त्री की तेरहीं १२वें दिन की होनी चाहिए।

– गरुड़ पुराण या गीता का पाठ इसी दिन समाप्त कर देना चाहिए।

– इस दिन प्रातः पंडित द्वारा सपिंडी-कृत कर्म कराया जाता है। (कार्य के लिए सामान पंडित से पूछकर)

– इसी दिन षोडशी श्राद्ध भी कर देना चाहिए क्योंकि हर माह के श्राद्ध करने की सुविधा न रही, तो दिक्कत होती है।

– १२ ब्राह्मणों को भोजन कराया जाय।

– भोजन में हल्दी नहीं डाली जाती है।

– ब्राह्मण भोजन के बाद ही घर वाले कुछ खायें।

– यदि मृतक स्त्री है, तो १२ ब्राह्मणों के अतिरिक्त ६ ब्राह्मणी को भोजन करायें। यदि मृतक स्त्री हो तो इसमें से एक ब्रह्मणी को शय्यादान का सारा समान दिया जायेगा। वही ब्राह्मणी हर माह श्राद्ध पर भोजन करने आये व बरसी पर भी दान का समान इसी ब्रह्ममणी को दिया जायेगा व भोजन कराया जायेगा।

– अपने निकट संबन्धियों, निकट परिजन आदि को तेरही के दिन बुलाना चाहिए। सभी उपस्थित जन व संबन्धी प्रसादस्वरूप भोजन पाते हैं।

बारह ब्राह्मणों के लिए– १२ गिलास, १२ सफेद रूमाल, १२ फल, १२ पेड़े, १२ सुपारी, १२ कमलगट्टा, दक्षिणा श्रद्धा अनुसार। (ब्राह्मण कई बार बाहर निकलते ही हाँड़ी फेंक देते हैं इसलिए हाँड़ी की जगह गिलास देने को लिखा है।)

– इसके बाद शय्यादान। इसमें सब सामान नया दिया जाता है।

शय्यादान के लिए सामान –

१. पलंग, रजाई, गद्दा, चादर, तकिया।
२. थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, चम्मच, बाल्टी।
३. छतरी, छड़ी, जनेऊ, चप्पल या खड़ाऊँ, टार्च।
४. शीशा, कंघा, तेल, माला, चंदन।
५. आसन कुशा का, रामायण या गीता।
६. पाँच कपड़े।
७. खाना, मिठाई।
८. अन्नदान, गऊदान (जितनी इच्छा हो)
६. अगर मृतक सुहागिन स्त्री है, तो सुहाग पिटारा जिसमें चूड़ी, बिन्दी, मेंहदी, बिछिया, कलावा तथा लौंग या नथ।

– जो पंडित सब कार्य कराये उसे ही यह दान देना चाहिए।

भले-बुरे की रस्म –

– यदि मृतक की स्त्री जीवित है, तो शय्यादान के बाद नहा ले।
– पीहर से आयी धोती, ब्लाउज आदि सिर पर उढ़ाये और **आगे** के रुपये दे। इसे **भले-बुरे** की रस्म कहते हैं।
– बेटों के ससुराल वाले और अन्य सम्बन्धी भी **'आगे'** के रुपये देते हैं।
– बेटों के ससुराल से स्त्री के कपड़े व क्रिया करने वाले को जोड़ा दिया जाता है।
– स्त्रियाँ कड़ुआ ग्रास करके भोजन करती हैं।

पगड़ी बाँधना –

– क्रिया करने वाले की हजामत (शेव) कराके उसे नये वस्त्र, पहनाये जाते हैं।
– चौक पूरकर उसे एक पट्टे पर बैठाते हैं।
– एक घड़ा या कलश पानी भरकर (जेघड़) रखा जाय और अगर मृतक पुरुष हो तो पुरुष के पाँच कपड़े और यदि मृतक स्त्री है तो स्त्री के पाँच कपड़े, कुछ रुपये और पत्तल में पेड़े रखकर संकल्प किया जाता है। यह सामान सवासनी को दिया जाता है।

– इसके बाद क्रिया करने वाले के पगड़ी बाँधी जाती है।
– सबसे पहले पहले बहन व बुआ के यहाँ से आई पगड़ी पहनाई जाय। फिर ससुराल से आया जोड़ा व तिलक दिया जाय फिर नाना-मामा के यहाँ से आया जोड़ा व पगड़ी दी जाये।
– सबसे पहले बहन व बुआ तिलक करती हैं, फिर सब नातेदार।
– तिलक में दिये जाने वाले रुपये दस, बीस या पचास हो सकते हैं, पर ग्यारह, इक्कीस व इक्यावन नहीं।
– औरत के मरने पर केवल बुआ ही तिलक करती है बाकी सम्बन्धी नहीं।
– सभी उपस्थित जन मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करते हैं। लौटते वक्त हरी तरकारी या पालक लाते हैं।
– रात को हरी तरकारी-साग छौंक कर बहुएँ ४-४ पराठे बनाती हैं। यह कुटुम्ब की सभी स्त्रियाँ सम्मिलित होकर बनाती हैं।
– आज से तवे पर पराठे सेंकने की आँट खुल जाती है।

स्त्री द्वारा आँट खोलना – सब कार्य हो जाने के बाद मृतक की स्त्री गंगा-स्नान को जाती है। बुरे-भले की जो धोती पीहर से आई थी, उसी को पहनकर स्त्री जाती है; वह धोती नहाकर वहीं छोड़ आती है। पीहर से आई हुई दूसरी धोती, ब्लाउज आदि पहनकर लौटती है। घर आकर **आँट खोलने** की रस्म की जाती है। बहुएँ सिर धोकर सिंदूर, बिन्दी, काजल लगाती हैं। गोटा लगा कोई कपड़ा पहन लेती हैं। कढ़ाई चढ़ाकर पूरी, पकौड़ी आदि बनाई जाती हैं। पास-पड़ौस में किसी मान्य को इसमें से कुछ भेज देते हैं। क्योंकि शोक के १२ दिन तक अपने घर से किसी के यहाँ सामान नहीं भेजा जाता है।

यदि मृतक स्त्री हो, तो घर की स्त्रियाँ, बहुएँ दूसरे दिन सिर सहित स्नान कर आँट खोलती हैं। कहीं-कहीं उसी दिन भी आँट खोल ली जाती है।

पहले मासिक श्राद्ध के बाद, मृतक की पत्नी पीहर जाती है। एक थैली में लड्डू रखकर ले जाती है। वहाँ पर ४-५ दिन रुककर पुनः अपने घर लौट आती है। पीहर वाले १ थैली में लड्डू भरकर, २ धोती, ब्लाउज, हाथ की

चूड़ी सोने की या चाँदी की देते हैं। घर लौटकर कोथली खोलकर २-४ घरों में लड्डू बाँट दिये जाते हैं। इसके बाद ही परिवार में कोई शुभ कार्य हो सकता है। सालभर तक मृतक के निम्न सोलह श्राद्ध किये जाते हैं :—

(१)	पन्द्रह दिन का	(२)	१ महीने का
(३)	१ १/२ महीने का	(४)	२ महीने का
(५)	२ १/२ महीने का	(६)	३ महीने का
(७)	४ महीने का	(८)	५ महीने का
(९)	६ महीने का	(१०)	७ महीने का
(११)	८ महीने का	(१२)	९ महीने का
(१३)	१० महीने का	(१४)	११ महीने का
(१५)	११ १/२ महीने का	(१६)	१२ महीने का।

प्रत्येक श्राद्ध के दिन पिण्डदान करना चाहिये। साल भर में श्राद्ध करने की सुविधा न होने पर इसी बारहवां (तेरहीं) के दिन ही षोड्श श्राद्ध कर देते हैं। पर यदि कोई इन्हें साल भर में कर रहा है, तो तेरहीं के दिन षोड्श श्राद्ध नहीं करना चाहिए।

श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन के बाद दक्षिणा देना आवश्यक है। दक्षिणा देने वाले को सूर्य की भाँति तेज मिलता है, तथा दीर्घायु प्राप्त होती है।

श्राद्ध के दिन भूखे आगन्तुक को भोजन अवश्य देना चाहिए, लौटाना नहीं चाहिए। भोजन कराते समय जाति-पाँति का विचार न करना चाहिए, क्योंकि सभी प्राणियों में आत्मा है; हमें तो उसी की तृप्ति करना है। इसका यह मतलब न निकालें कि ब्राह्मण की जगह शूद्र को श्राद्ध में निमंत्रित कर खिलाया जाय; पर यदि श्राद्ध के दिन भूखा शूद्र भी आ जाय, तो उसे भोजन कराना उचित है, भूखा न लौटावें।

बरसी—मृतक-पुरुष की बरसी साढ़े ग्यारह महीने पर की जाती है और स्त्री की ११ महीने पर। कुछ लोग पुरुष की बरसी १२ मास की व स्त्री की बरसी ११ १/२ मास की करते हैं। बरसी पर प्रातः हवन करके ब्राहमणों को भोजन कराया जाता है।

बरसी पर सामान—पुरुष की बरसी हो, तो पहनने के पाँच कपड़े, ओढ़ने-बिछाने के लिए गद्दा, रजाई, चादर, चदरा, तकिया, गिलाफ, पलंग (खाट), खड़ाऊँ या जूता, छाता, छड़ी, मंजन, साबुन, अंगोछा, माला, तेल कंघा, शीशा, आदि बरसी कराने वाले पंडित या पुरोहित को शय्यादान में देना चाहिए। इसके अतिरिक्त थाली, लोटा, गिलास, कटोरी आदि पाँच बरतन भी दिये जाते हैं। अँगूठी या अन्य गहने भी हो सके, तो वह भी दें। सालभर के लिए खाने का अनाज, दाल, घी इत्यादि भी दिया जाता है या उसके निमित्त रुपये भी दिये जाते हैं। मृतक-स्त्री की बरसी पर स्त्री के वस्त्र व उपरोक्त अन्य सब सामान होता है। जिस ब्राह्मणी ने श्राद्ध में खाना खाया हो उसी को शैय्यादान का सारा सामान दिया जाता है।

कम से कम बारह ब्राह्मणों को भोजन करावें, ब्राह्मणों को दक्षिणा भी दी जाती है। अपने रिश्तेदारों व अन्य व्यक्तियों को भी प्रसादस्वरूप भोजन पाने के लिए बुलाते हैं।

बरसी के बाद साढ़े ११ महीने और १२ महीने का श्राद्ध भी करते हैं।

प्रत्येक वर्ष मृतक की तिथि पर तथा कनागत में उसी तिथि को श्राद्ध व ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है। गया जी या बद्रीनाथ जी में श्राद्ध व पिण्डदान कर देने के बाद हर वर्ष तिथि पर व कनागत में श्राद्ध करना आवश्यक नहीं होता।

लोकप्रथा है कि मृतक का गया में श्राद्ध कर देने के बाद पितरों की मुक्ति हो जाती है और इसके बाद श्राद्ध नहीं करने चाहिए। ऐसा कहा जाता है, पर यदि कोई पुत्र फिर भी श्राद्ध करे, तो उसका फल श्राद्धकर्ता को धर्मरूप में मिलेगा।

❊ ❊ ❊